छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह : भाद्रपद, संवत् 2080
सितम्बर 2023

ओ३म्

अंक 209, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

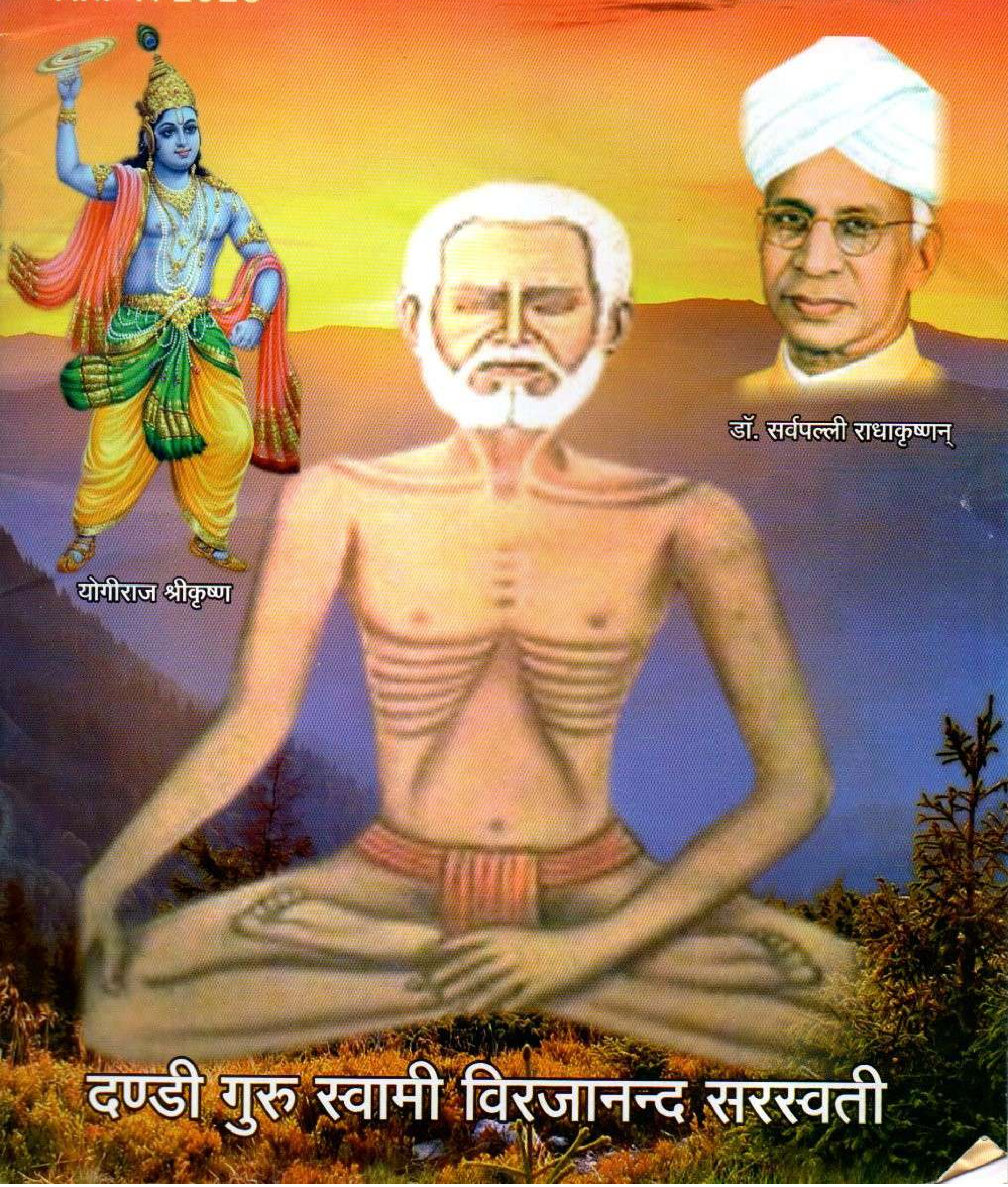

दण्डी गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती

महिला आर्यसमाज जवाहर नगर, रायपुर में वेदप्रचार सप्ताह पर हवन करते हुए

आर्यसमाज संतोषीनगर, रायपुर में श्रावणी पर्व पर वैदिक हवन करते हुए

आर्यसमाज पार्वतीपुर (अम्बिकापुर) में वेदप्रचार सप्ताह के दौरान यज्ञ करते हुए कार्यकर्ता के साथ सभा के अधिकारी

राजधानी रायपुर स्थित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर एवं आर्यसमाज कमलविहार रायपुर के श्रद्धालु आर्यजनों के बीच श्रावणी का संदेश देते हुए आचार्य गण

वैदिक गुरुकुल सलखिया में श्रावणी अवसर पर ब्रह्मचारियों के साथ आश्रम के आचार्य व संचालकगण

आर्यसमाज सलखिया में श्रावणी अवसर पर वैदिक यज्ञ करते हुए यजमानगण

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – 2080

सृष्टि संवत् – 1,96,08,53,124

दयानन्दाब्द – 199

प्रधान सम्पादक

डॉ. रामकुमार पटेल

प्रधान सभा

(मोबा. 7223835586)

प्रबंध सम्पादक

श्री अवनी भूषण पुरंग

मंत्री सभा

(मोबा. 9893063960)

सहप्रबंध सम्पादक

आचार्य जगबन्धु आर्य

कोषाध्यक्ष सभा

(मोबा. 9770331191)

: सम्पादक :

आचार्य कर्मवीर

मोबा. – 8103168424

पेज सज्जा : श्रीनारायण कौशिक

— कार्यालय पता —

छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द परिसर, आर्य नगर,

दुर्ग (छ.ग.) 491001

फोन : (0788) 4225499

e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क : 100, दसवर्षीय 800

वर्ष – 18, अंक – 10 | मास/सन् – सितम्बर 2023

ओ३म

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयम् ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय सूची

			पृष्ठ क्र.
1.	दूसरी शाखा का अतिथि	स्व. रामनाथ वेदालंकार	04
2.	कौन कहता है डिग्री की जमाखोरी ही शिक्षा का पैमाना है ?	आचार्य कर्मवीर	05
3.	धारणात् धर्ममित्याहुः	स्वामी विवेकानन्द सरस्वती	08
4.	धर्म क्षेत्र का पुरोधा – श्रीकृष्ण	क्षितीश वेदालंकार	09
5.	प्रासंगिकता-शिक्षक दिवस की	मनुदेव अभय विद्यावाचस्पित	11
6.	"मानव जीवन मिलना ईश्वर की हम पर बड़ी कृपा"	मनमोहन कुमार आर्य	13
7.	धन की भूख और विश्रान्ति एक साथ नहीं	डॉ. ज्ञानप्रकाश	16
8.	"विकास के कारक"	अजय शर्मा	18
9.	"विश्वकर्मा और वेद"	आचार्य विष्णु वेदार्थी	20
10.	"कब मिलेगी मेरी यात्रा को मंजिल"	राजपाल सिंह आर्य	22
11.	हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी कब बन सकेंगे?	कन्हैयालाल आर्य	24
12.	"प्रजापते: प्रजा अभूम"	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	26
13.	हमारे आदर्श-गुरु विरजानन्द सरस्वती	डॉ. अशोक आर्य	28
14.	आर्यो ! जरा तो सोचो	आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री	29
15.	कैसा पानी, किस प्रकार पिएँ?	आचार्य डॉ. वेदव्रत आर्य	30
16.	समाचार प्रवाह		33

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत

E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

लेख में प्रकट किए विचारो के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – डॉ. रामकुमार पटेल द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद
वेदामृत

दूसरी शाखा का अतिथि

भाष्यकार – स्व. डॉ. रामनाथवेदालंकार

पश्यन्नन्यस्या अतिथि वयायाः, ऋतस्य धाम विमसे पुरूणि ।
शंसामि पित्रे असुराय शेवम्, अयज्ञियाद् यज्ञियं भागमेमि ॥

(ऋग. 10–124–1)

ऋषिः अग्निः । देवता अग्निः । छन्दः त्रिष्टुप ।

(अन्यस्याः) दूसरी **(वयायाः)** शाखा के **(अतिथि)** अतिथि को **(पश्यन्)** देवता हुआ (मैं) **(पुरूणि)** बहुत से **(ऋतस्य)** सत्य के **(धाम)** तेजों का **(विमसे)** निर्माण करता हूँ । **(असुराय)** प्राणप्रदाता तथा पाप–ताप को प्रक्षिप्त करने वाले **(पित्रे)** पिता (अग्नि प्रभु)**(शेवं)** सुखकारक स्तोत्र का **(शंसामि)** कीर्तन करता हूँ । **(अयज्ञियात्)** अयज्ञिय से **(यज्ञियं)** यज्ञिय **(भागं)** भाग को **(एमि)** प्राप्त करता हूँ ।

श्रुति कहती है कि एक वृक्ष की दो विभिन्न शाखाओं पर दो पक्षी बैठे हुए हैं, उनमें से एक उसके फलों को चख रहा है और दूसरा द्रष्टा मात्र बना हुआ है । मेरा आत्मा भी उन पक्षियों में से एक है । मैं जगद्–वृक्ष या शरीर–वृक्ष की एक शाखा पर बैठा हुआ अपने अर्जित कर्म–संस्कारों के अनुसार कर्म–फलों का भोग कर रहा हूँ । ये कर्म–फल कड़वे–मीठे दोनों प्रकार के हैं । कृत शुभ–कर्मों के आधार पर मैं मीठे फलों का स्वाद लेना पड़ रहा है। अब तक मैं फलों को चखने में और मौज–मस्ती के कर्मों को करने में संलग्न था । पर आज मेरा ध्यान दूसरी शाखा पर बैठे हुए अतिथि परमात्मा की ओर गया है । अहो, मेरे घर में अतिथि आया बैठा था, मेरे ही आश्रय–वृक्ष की एक शाखा पर उसने आवास बनाया हुआ था, पर अब तक मेरा उसकी ओर ध्यान तक नहीं गया । गृहागत अतिथि का सत्कार न कर मैं अपने ही भोग भोगने में लगा रहा, यह मुझसे कितना बड़ा अपराध हुआ है । पर अब तो मैं उस अपराध का परिमार्जन और प्रायश्चित कर लूँ ।

आज मैंने दूसरी शाखा पर बैठे हुए उस विलक्षण अतिथि की ओर दृष्टिपात किया है तो मुग्द रह गया हूँ। वह तो मेरा पिता है । अब तक मैं अपने पिता को न पहचान पाया । मेरा पिता मेरे घर अतिथि बनकर आया है । वह असुर है, प्राणदाता है और पाप–ताप को दूर प्रक्षिप्त कर देने वाला है । वह तो सांसारिक फलों के भोग से सर्वथा उपरत होकर ऋत के पंखों से ऋत की उड़ान भरने वाला पंक्षी है । उसके ऋत को मैं भी ग्रहण करता हूँ। मैं अपने अन्दर ऋत के तेजों का निर्माण करता हूँ । अब तक मैं अयज्ञिय भाग को प्राप्त करता रहा, बिना यज्ञ किए स्वयं को भोग लगाता रहा । पर अब मैंने जगद्–वृक्ष की दूसरी शाखा पर बैठे हुए अतिथि से यज्ञ का महत्व समझ लिया है । अब तो मैं जो कुछ प्राप्त करता हूँ उसकी पहले यज्ञ में हवि देता हूँ, फिर जो यज्ञशेष होता है, उसका भोग करता हूँ । यही यज्ञिय भाग को ग्रहण करना है ।

हे अतिथिवर ! हे पिता ! मैं तुम्हारे प्रति सुखकर स्तोत्र का कीर्तन करता हूँ, ऋद्धावनत ही तुम्हें प्रणाम करता हूँ । मेरे श्रद्धा–सुमन, स्तोत्र एवं प्रणाम को स्वीकार करो ।

1. वया शाखा (निरु.1.4) । 2. वि माङ् माने शब्दे च । 3. असून प्राणान् राति ददाति यः सः असुरः (असु. रा दाने, क प्रत्यय) । यद्वा अस्यति क्षिपति पापं यः सः (असु क्षेपणे, उरन् प्रत्यय) । 4. शेव सुख (निघं. 3.6) । 5. ऋ. 1.164.20

सम्पादकीय

कौन कहता है डिग्री की जमाखोरी ही शिक्षा का पैमाना है ?

सहृदय पाठकों !

यह बात निर्विवाद सत्य पर आधारित है कि शिक्षा व्यक्ति, समाज और देश ही नहीं, बल्कि जीवन के निर्माण की एक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के ज्ञान में अभिवृद्धि तो करती ही है, लेकिन उसके साथ-साथ उसके हृदय और मस्तिष्क के कपाट भी खोलती है । वह व्यक्ति के दिल में निर्माण की भावना और तड़पना पैदा करती है यह तो एक शाश्वत प्रश्न है कि शिक्षा का आविर्भाव पहले हुआ या निर्माण की प्रक्रिया पहले शुरु हुई, यह प्रश्न ठीक उसी तरह अनुत्तरित है जिस तरह इस बात का फैसला होना मुश्किल है कि पहले फल हुआ अथवा बीज ? ठीक इसी तरह का एक और सवाल है – पहले शिक्षा में गिरावट आयी अथवा सभी ओर अस्थिरता-अनिश्चित्ता पहले पैदा हुई? लेकिन यह क्या हैरत की बात नहीं कि आज सभी ओर शिक्षा व साक्षरता का तेजी से प्रसार तो हो रहा है, लेकिन उसकी तुलना में इंसानियत की भावना कम तो हो रही है, जीवन में कुण्ठा व निराशा बढ़ रही है । उससे अपराध पनपते है, असुरक्षा की भावना पनपती है । शिक्षा के साथ बेरोजगारी बढ़ती है और उसके साथ अन्य समस्यायें। यह कैसी शिक्षा है, जो व्यक्ति को बेकार, निष्क्रिय और आत्मविश्वासहीन बनाती है ? ऐसी शिक्षा में जरुर कोई खोट है, यह शिक्षा की या नीतियों की दिशाहीनता का नतीजा है । आजादी के 77 साल बाद भी यह हालत होना आश्चर्यजनक भी है और खेदजनक भी। हो सकता है मौजूदा सरकार द्वारा लाई गई नयी शिक्षा नीति समूचे भारतवर्ष की कायापलट करने वाली साबित हो किन्तु अभी तक की शिक्षा नीतियां तो दशा व दिशा तो क्या बदल कर रखती, उल्टा दिशाहीन करने में अधिक सफल हुई ।

हमारे देश में आजादी के संघर्ष के दौरान देश के नेताओं ने यह निश्चय व्यक्त किया था कि क्लर्कों का उत्पादन करने वाली, व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से गुलाम बनाने वाली शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन ल्या जायेगा, लेकिन आज भी शिक्षा का वही उपनिवेशवादी ढांचा बरकरार है। तमाम योजनाओं के बाद भी भावी पीढ़ी का निर्माण इस हालात में है कि जीवन और आचरण के बीच बड़ी खाई मौजूद है। दुर्भाग्य से हमारे देश में

शिक्षा का ज्यादातर मतलब लड़के के लिए नौकरी और लड़की के लिए अच्छे वर की प्राप्ति करने तक ही सिमट कर रह गया है । शायद इसके आगे हम शिक्षा की उपयोगिता और महत्व की बात सोचते ही नहीं है ।

इससे भी बडी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि आजादी के 77 साल बाद भी देश में शिक्षा की बार–बार नयी–नीति तो बनती है, पर उस पर अमल नहीं होता । देश की योजना में शिक्षा को कोई प्राथमिकता भी प्राप्त नहीं है । बिजली, सिंचाई, कृषि और उद्योगों को सब से ज्यादा प्राथमिकता दी गई है, नौकरशाही भी महत्वपूर्ण बन गयी है, लेकिन इन सारे काम को करने वाले योग्य और संकल्प वाले लोग जहां से मिलेंगे, उसके निर्माण की किसी को चिन्ता नहीं है, उसको कोई प्राथमिकता देने को तैयार नहीं है और यही सबसे बड़ी त्रासदी है । उपनिवेशवादी व्यवस्था का यह असर अब तक बरकरार है । अंग्रेजी शासनकाल में सबसे बड़ी प्राथमिकता रेवेन्यू और पुलिस विभागों को दी जाती थी । पुलिस की जगह इसलिए थी कि डंडे के बल पर यहां के लोगों को काबू में रखा जा सके और रेवेन्यू की इसलिए की उस समय जमीन का लगान ही सरकारी आमदनी कासबसे बड़ा जरिया था । आज भी देश में पुलिस और नौकरशाही को सबसे ज्यादा प्राथमिकता प्राप्त है । साहब तो आज भी साहब है और किसान को आज भी हेय दृष्टि से देखा जाता है । यह उपनिवेशवादी प्रवृत्ति हमारे चिन्तन से अभी तक खत्म नहीं हुई ।

शिक्षा पर कुछ ध्यान तो दिया गया । कई शिक्षा आयोग भी बने । कुछ साल पहले देश में दो शिक्षा आयोग शिक्षा की समस्याओं, शिक्षकों की परिस्थितियों और निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के उपाय पर विचार कर रहे थे। उनकी रिपोर्ट भी आयी । इससे पूर्व भी तीन शिक्षा आयोग बन चुके हैं । राधाकृष्णन् आयोग, मुदलियार आयोग व कोठारी आयोग, लेकिन इन आयोगों की रिपोर्टों पर धूल जमती रही है। हालत तो यह है कि नयी–नयी घोषणाओं के बाद भी देश की शिक्षा दिशाहीन और लक्ष्यहीन रास्ते पर बेतहाशा दौड़ रही है । शिक्षा की दुकानें खुल गई है या खुलती जा रही है और यहां लूट सके तो लूट का स्वर प्रबल है । नकलबाज और उनके सहयोगी क्या किसी जीवंत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं ? शिक्षा के मामले में स्थिति शायद ऐसी है कि हमारी कोई स्पष्ट नीति नहीं है। कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है । कोई दिशा नहीं है । व्यक्ति और समाज के उत्कर्ष तथा उसके बौद्धिक विकास का कोई सुस्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है । यानी कुल मिलाकर भटकाव की स्थिति विद्यमान है । इससे भावी पीढ़ी भटक रही है। वह पीढ़ी भटक रही है, जिसे कल देश की बागडोर संभालनी है। इस रास्ते से निकले जो लोग शिक्षा, राजनीति, प्रशासन, व्यापार, उद्योग में आयें हैं उन्हें देख लीजिये और उनकी शिक्षा का अंदाजा लगा लीजिये । शायद शिक्षा के दोषके कारण ही कई लोग कलम या औजार की जगह हाथ में पत्थर और मन में श्रद्धा व निष्ठा की बजाय नफरत लिए घूमते हैं। जीवन–मूल्यों में आई गिरावट से माहौल में और बिगाड़ आया है । जीवन के हर क्षेत्र में गिरावट के दर्शन होते हैं । पिछले सालों में विश्वविद्यालयों के अन्दर देश–विरोधी गतिविधियों में शामिल छात्रों की हरकतें चिन्ताजनक रही हैं । यह सब दिशाहीन शिक्षा का ही परिणाम है।

जब शिक्षा में भटकाव होगा तो उस भटकाव के रास्ते से समाज और जीवन में उतरने वाली पीढ़ी को भटकाव से कैसे बचाया जा सकता है ? इसके नतीजे भी आज सामने है । राजनीति भ्रष्ट है । आर्थिक जीवन भ्रष्टाचार से ग्रस्त है । चारों ओर शोषण व विषमता व्याप्त है । व्यापार जगत में कालाबाजारी तथा मुनाफाखोरी हावी है । कानून का राज्य या रामराज्य की कल्पना भी कोई नहीं करता । देशभक्ति और चरित्र को हेय दृष्टि से देखा जाता है । लोगों में विश्वास, आत्मविश्वास. चरित्र, निष्ठा व श्रद्धा की भावनायें डिग गई लगती है । देश में शिक्षा–प्रसार के बावजूद दहेज, विषमता, छुआछूत, जातिवाद, भाषावाद, प्रांतवाद, क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता जैसी बुराईयां भी बढ़ रही है । यानी देश में साक्षरता तो बढ़ी है, लेकिन वास्तविक शिक्षा घटी है । डिग्री की जमाखोरी ही सही शिक्षा की कसौटी नहीं हो सकती । शार्टकट और घटिया तरीकों से लक्ष्य पाने की दौड़ में यदि लक्ष्य मिल

भी जाय तो उसे टिकाये रखने की योग्यता नहीं रहती।

शिक्षा के लिए बड़े-बड़े भवन तो बने हैं, आकाश छूने वाली बहुमंजिली बिल्डिंगें भी बनी है, लेकिन लगता है मानो वह निष्प्राण है। शायद इस तरफ पूरी गंभीरता से किसी का ध्यान नहीं है। यदि गया है तो इस रोग का पुख्ता इलाज नहीं हुआ है। शिक्षा केन्द्रों में ज्ञान व भक्ति का अनुष्ठान जरुरी है। भाव और भावना भी जरुरी है। अच्छे जीवन की जिजीविषा, संकल्प और संघर्ष की तैयारी भी जरुरी है। निर्माण का ऐसा व्यापक दृष्टिकोण आज की सबसे बड़ी जरुरत है। हम यह जानते हैं कि शिक्षा मानव को आगे बढ़ाने और ऊंचा उठाने का संकल्प जगाये और उस रास्ते पर लगातार चलते रहने का विवेक पैदा करें। उस रास्ते में आने वाली अड़चनों को पार करने का ज्ञान एवं विवेक जगाने का काम करे। जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए विश्वास, आत्मविश्वास और साहस का भाव संचारित करे। उस पर विजय पाने का संकल्प मजबूत करे। निराश करने वाली प्रवृत्ति को ठोकर मारने का एवं आशा का भाव कूट-कूट कर भरे। लेकिन आज का जो ढांचा एवं व्यवस्था है, वह असंतुलित है। भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, मौकापरस्ती, कामधकाऊ प्रवृत्ति. स्वार्थ और आपसी द्वेष के रहते व्यक्ति में ऊँचा उठने की संचारी भाव कैसे पैदा हो सकते हैं ? हृदय और मस्तिष्क का मेल कैसे बैठ सकता है ?उज्ज्वल भविष्य की किरण कैसे दीख सकती है ?

इसलिए इस बात का विचार जरुरीहै कि शिक्षा कौन सी दी जाये ? किस प्रकार दी जाये ? ज्ञान भी दिया जाये और उसके साथ-साथ भक्ति का भाव भी जगाया जाये। जीवन की दिशा भी निर्धारित की जाये और उस पर बढ़ने का संकल्प भी मन में जगाया जाये। यदि यह सब व किया गया तो हमारी शिक्षा से भावी प्रोफेसर, शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस., आई.पी.एस., मन्त्री, सचिव, क्लर्क, व्यापारी, किसान, मजदूर कैसे मिलेंगे ? इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। नकल करके डाक्टर बना व्यक्ति बीमारी का क्या इलाज करेगा ? सिफारिशी इंजीनियर कैसा पुल बनायेगा ? ऐसा मन्त्री कैसे फैसले करेगा ? यह विचार जरुरी है। इन दिनों फिल्मी जगत जिनका उद्देश्य दृश्य साधनों द्वारा सामाजिक विसंगतियां दूर कर समाज की बुराईयों से बचाना है किस प्रकार स्वयं दिशाहीन होकर अमानवीय कृत्यों में जुट गया है यह रोज के अखबारों की सूर्खियां बनती आप देख ही रहे हैं।

आज सब ओर धन कमाने की होड़ लगी है। धन ही तो जीवन नहीं है। वह धन खर्च किस प्रकार हो, इसके लिए विवेक जरुरी है। इन सब पहलुओं पर देश के कई मनीषियो ने विचार किया है और अपनी सीमाओं के अन्तर्गत अपने क्षेत्र के भावी युवकों को तैयार करने के लिए उन्होंने जगह-जगह अच्छे शिक्षण संसाधनों की नींव डाली है, शिक्षा देना और लेना दोनों ही तपस्या है। यह काम केवल सरकार का नहीं, समाज का भी है। हम अच्छी शिक्षा-संस्थाएं बनायें, ताकि जो ज्योति वहां जलायी जाये, वह घर-घर और हृदय-हृदय में पहुंच सके। यही आज की जरुरत है। अच्छी शिक्षा-संस्थाएं ही देश में नये विश्वास को नई पीढ़ी की कर्म-शक्ति को जगाकर निर्माण का नया अध्याय शुरु कर सकती है। स्वामी दयानन्द ने कहा था - आओ, मनुष्य बनें ! पहले मनुष्य का निर्माण करो। देश को व्यक्ति चाहिए। निष्ठावान व्यक्ति की ही बड़ी जरुरत है। गरीबी और दिशाहीन कायर युवक ही सबसे बड़ी समस्या है। आज की सभी समस्याओं का उत्तर है, व्यक्ति निर्माण, और यह काम शिक्षा-मन्दिरों द्वारा ही सम्भव है। चाहे सरकार काम करे या समाज या दोनों। दोनों की ही यह जिम्मेदारी है। सही शिक्षा ही व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र-जीवन का कल्याण और उत्थान कर सकती है। नई शिक्षा नीति आनेवालो समय में सकारात्मक परिणामदायी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

– आचार्य कर्मवीर

विवेचनात्मक

धारणात् धर्ममित्याहु:

- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, कुलाध्यक्ष गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ (उ.प्र.)

सूर्य उदय हुआ है वा नहीं यह बात कहकर बतानी नहीं पड़ती। प्रकाश और गर्मी इस बात का परिचय देते हैं कि सूर्योदय हो गया है। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य धर्मात्मा हो तो इसका परिचय यह कहकर नहीं दिया जा सकता है कि वह मनुष्य धर्मात्मा है, क्योंकि उसने सौ बार नाम का जप किया है, हजार बार गायत्री जपी है, एवं वह नित्य धर्म पुस्तक का पाठ करता है। कोई मनुष्य सचमुच में धर्मात्मा है या नहीं इसका पता इस बात से लगता है कि उसके चारों ओर रहने वाले पर उसके व्यवहार से कोई सुखदायक प्रभाव पड़ता है या नहीं। अपनी चारों ओर की अवस्थाओं में परिवर्तन धर्मात्मा रूपी सूर्य की धूप है। बस, यदि हम यह जानना चाहें कि हम धर्मात्मा है या नहीं तो इसे हम अपने चारों ओर होने वाले सुखदायक परिवर्तन से जान सकते हैं। लैम्प में प्रकाश है वा नहीं इसे हम इस बात से नहीं नाप सकते कि उसमें पूरा तेल भरा है वा नहीं ? लैम्प के प्रकाश का माप केवल इस बात से हो सकता है कि उसके चारों ओर का अन्धकार दूर हुआ है या नहीं।

सूर्य बिना तेल बत्ती के प्रकाशमान है एवं बुझा हुआ दीपक तेल-बत्ती के होते हुये भी प्रकाशहीन है। इसी प्रकार कई मनुष्य पूजा-पाठ के बिना धर्मात्मा है, वे सूर्यवत् हैं, और कई मनुष्य पूजा-पाठ करते रहने पर भी धर्महीन है, वे पाखण्डी हैं। परन्तु साधारण मनुष्यों को लैम्प के समान प्रकाश उत्पन्न करने के लिये पूजा-पाठ रुपी तेल-बत्ती की आवश्यकता रहती है। जो मनुष्य साधारण होते हुए भी पूजा-पाठ से तथा सत्संग से हीन है, उनका दिया भी बुझा रहता है। यह बात दूसरी है कि उनके दिये बुझने का कारण पाखण्ड का धुँआ नहीं, अभिमान की आंधी है। दिया धुएँ से बुझ जाए या आंधी से, इससे उसके प्रकाशहीन होने में कुछ अन्तर नहीं आता। जिस मुहल्ले में तुम रहते हो यदि उसकी नालियां दुर्गन्धयुक्त हैं और चारों ओर कीचड़ सड़ रहा है, मच्छरों की बस्तियाँ बस रही है, लोग मैले कुचैले अनपढ़, रोगों के मारे और निर्धनता के सताये हुए और तुम इन अवस्थाओं में परिवर्तन करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हो, तो मत समझो तुम धर्मात्मा हो। चाहे तुम कितने भी लम्बी समाधि लगाते हो, कितना भजन कीर्तन कर रहे हो, कितने घण्टे-घड़ियाल बजाते हो, और कितनी भी सामग्री आंखों से गरीबों का दुःख देखने के लिए तुम्हारी कानों को दर्द भरी आहों को सुनने के लिए और तुम्हारे हाथों को उनके कष्ट निवारण के लिए विवश नहीं किया, तो तुम आंख रहते भी अन्धे हो, कान रहते भी बहरे हो, हाथ रहते भी लूले हो।

संसार में आज तक जितने भी महात्मा धर्म प्रचार करने आये वह इसे ही समवेदना की भावना का प्रकाश तुम्हारे दीये-बत्ती में जलाने आये थे। पादरी लोग जब कहते हैं कि मसीह ने अन्धों को आंख दी, बहरों को कान दिये, लूले-लंगड़ों को हाथ-पैर दिये तो वह उस महात्मा के कारनामों को ठीक रुप से पेश नहीं करते। संसार के सभी महात्माओं ने अन्धों को आंखें दी, बहरों को कान दिये, लूले-लंगड़ों को हाथ-पैर दिए। पर इस अभागे संसार ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, आलस्य, प्रमाद आदि के विषय से अपने आपको अन्धा, बहरा, लूला, लंगड़ा बना डाला। जिस समय महात्मा पुरुषों की प्रेरणा से जागृति सामवेदना की भावना हमें अपने चारों ओर फैली हुई बिगड़ी अवस्था को परिवर्तन करके, इस धरती को साफ-सुथरा और आनन्द भरी बनाने के लिए कटिबद्ध करती है, उस समय हमारी खोई हुई आंखे वापिस मिल जाती है, हम बहरे कान सुनने लगते और हमारे कटे हुए हाथ-पैर फिर हरे हो जाते हैं। बस, जहां यह अपने चारों ओर की अवस्था को सुखमय दशा में परिवर्तन करने की प्रबल भावना जीता है, वही धर्म है। यही धर्म का स्वरुप है।

धर्म क्षेत्र का पुरोधा : श्रीकृष्ण

पर्व-प्रेरणा

- क्षितीश वेदालंकार

आर्यावर्त्त में राम और कृष्ण दो ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्हें राष्ट्रपुरुष और इतिहासपुरुष की दृष्टि से अद्वितीय कहा जा सकता है । राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और कृष्ण लीला-पुरुषोत्तम हैं । पुरुषोत्तम दोनों हैं । पुरुषोत्तम अर्थात् उत्तम पुरुष, अर्थात् आर्य । आर्यत्व की दृष्टि से जीवन को उत्तमता की पराकाष्ठा तक ले जाने वाले ये दोनों अनुकरणीय महापुरुष हैं, जिनसे युग-युगान्तर तक मानव-जाति प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी । परन्तु इनकी स्तुति और भक्ति से ओतप्रोत मानव-हृदय ने अपनी कल्पनाशील बुद्धि के चमत्कार द्वारा इन दोनों ही महापुरुषों को मानवोत्तर से इस प्रकार मानवेत्तर दिया है कि तथाकथित आधुनिक बुद्धिवादी लोग इन दोनों ही इतिहास पुरुषो को अनैतिहासिक कहने में अपनी आधुनिकता मानने लगे हैं । परन्तु भारतीय जन-मानस ने अपने हृदय के सिंहासन पर इन दोनों को इतने दृढ़ भाव से विराजमान किया है कि उसे अपने परिवार या स्वयं अपने निज के अस्तित्व से भी अधिक इन इतिहास पुरुषों की ऐतिहासिक सत्यता पर आस्था है ।

ये दोनों इतिहास पुरुष महान् स्वप्नद्रष्टा भी थे । दोनों ने ही अपने स्वप्नों को अपने जीवनकाल में चरितार्थ करके दिखा दिया । सामान्य व्यक्ति महान् स्वप्न नहीं देखा करते । कभी उत्साह में आकर वैसा कर भी बैठे तो उनके स्वप्न उनकी सीमाओं के कारण और संसार की विपरीत परिस्थितियों के कारण शेखचिल्ली के स्वप्न बनकर रह जाते हैं । पर इन दोनों महापुरुषों के जहां स्वप्न विराट थे, वहां इनके कर्त्तव्य भी विराट थे और उन स्वप्नों की पूर्ति भी उतनी ही विराट थी । संसार का इतिहास असफल स्वप्नद्रष्टाओं के स्वप्नभंगों की कहानियों से भरा पड़ा है । उन असफलताओं के महासागर में इन दोनों महनीय महापुरुषों का स्वप्न साफल्य अद्भूत ज्योति स्तम्भ बनके खड़ा है । संक्षेप में कहना हो तो यह कहा जा सकता है कि श्रीराम ने नेपाल के सीमावर्ती प्रदेश मिथिला से लेकर राक्षसाधिपति रावण की लंका तक ठेठ उत्तर से लेकर ठेठ दक्षिण तक सारे भारत को एक सूत्र में आबद्ध किया था, तो कृष्ण ने द्वारिका से लेकर मणिपुर तक ठेठ पश्चिम से ठेठ पूर्व तक सारे भारत को एक सूत्र में आबद्ध और एक दृढ़ केन्द्र के अधीन बना दिया कि समस्त राष्ट्र को इतना बलवान और इतना अपराजेय बना दिया कि महाभारत के पश्चात लगभग 4 हजार वर्ष तक अनेक विदेशी शक्तियाँ बार-बार प्रयत्न करने पर भी आर्यावर्त्त को खण्डित नहीं कर सकीं । आश्चर्य की बात यही है कि इन दोनो राष्ट्रपुरुष के अन्य अवान्तर रुपों की चर्चा से जहां ग्रन्थ के ग्रन्थ भरे पड़े हैं, वहां इस राष्ट्रनिर्माता रुप की चर्चा प्रायः नगण्य ही रह गई है। यह हमारी कूपमण्डूकता और मानसिक दृष्टि से बौनेपन की निशानी नहीं तो और क्या है ? ये महापुरुष जितने विराट थे, स्वप्न की दृष्टि से भी और उसकी पूर्ति की दृष्टि से भी, हमारे लेखक और कलि उसकी तुलना में उतने ही वामन रह गए।

जिस स्वप्न की हम चर्चा कर रहे हैं, उसका बीज मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मन में ऋषियों द्वारा बोया गया था, जबकि योगेश्वर श्रीकृष्ण का यह स्वप्न स्वोपज था । राम का जीवन आदि से अन्त तक ऋषियो की योजना, उनके मार्गदर्शन और उनके अनुशासन से संचालित था और इसीलिये वे ऐसे सरोवर की तरह मर्यादित थे, जिसमें कभी ज्वार नहीं आ सकता। होश संभालने के बाद श्रीकृष्ण जीवन के प्रत्येक क्षण में, अन्तरात्मा से प्रेरित थे, इसलिए उनका जीवन एक ऐसी पहाड़ी नदी के समान है जो उछलती, कूदती, चट्टानों को तोड़ती, दुर्गम उपत्यकाओं में अपना मार्ग बनाती और बरसात में अपने कूल-किनारों की मर्यादाओं को भंग करती लगातार आगे बढ़ती चली जाती है । विचारकों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को द्वादश कलावतार और श्रीकृष्ण को षोडश कलावतार कहा है ।

उनका अभिप्राय एक को दूसरे से बड़ा या छोटा कहने से नहीं, प्रत्युत राम क्योंकि सूर्यवंशी थे और सूर्य की गति ज्योतिष के हिसाब से बारह राशियों के अन्दर होती है. इसलिए राम को भी उन्होंने द्वादश कलाओं के अवतार के रुप में सम्बोधित कर दिया, और श्रीकृष्ण क्योंकि चन्द्रवंशी थे और चन्द्रमा की कृष्णपक्ष से शुक्लपक्ष तक सोलह कलाएं मानी जाती हैं, इसलिए श्रीकृष्ण को षोडश कलावतार कह दिया। परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि श्रीराम को जिस युग में और जिन परिस्थितियों में अपने विराट को स्वप्न को पूर्ण करने का सौभाग्य मिला, कदाचित् वे परिस्थितियां उतनी जटिल नहीं थी, जितनी श्रीकृष्ण के समय थी। रामायणकालीन समाज तो काफी-कुछ मर्यादा में बंधा हुआ था जबकि कृष्णकालीन समाज मर्यादाओं के होते हुए भी उनको तोड़ने में ही अपनी शान समझता था। जिस युग में और जिन परिस्थितियों में श्रीकृष्ण ने सफलता प्राप्त की, उस युग में और उन परिस्थितियों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम होते तो क्या करते, यह केवल कल्पना का ही विषय बन सकता है।

हम में से अधिकांश लोग इतना तो जानते हैं कि हमारा एक राष्ट्र है और अतीत काल में उसके जीवन का आधार धर्म रहा है, किन्तु मानव-जीवन को सब पुरुषार्थों की प्राप्ति का साधन मानकर तद्नुसार समाज व्यवस्था का निर्माण करके जो राष्ट्रधर्म तैयार होना चाहिए, उसकी रुप-रेखा क्या हो, उसके बारे में दिग्भ्रम ही अधिक दिखाई देता है। राष्ट्र जब जीवित रहते हैं, तो उसका आधार उनकी निश्चित जीवन प्रणाली और उनके जीवन के उद्देश्य के रुप में उनका तत्वज्ञान रहता है। राष्ट्र के महापुरुष इसी तत्वज्ञान के आधार पर समय-समय पर इहलोक और समलोक की नीति, शत्रु-मित्र-व्यवहार, आदर्श और क्रियात्मकता की आचरणीय सीमा और व्यक्ति तथा समाज के आपसी सम्बन्धों को निर्धारित करते हैं। सर्वसाधारण उन महापुरुषों के आचरण और उनके द्वारा निर्धारित नीति का ही अनुगामी होता है। अमुक सिद्धान्त क्यों ग्रहण करने योग्य है, अथवा निश्चित सिद्धान्तों को त्याग देने से समाज का कौन-सा अहित होगा- आदि प्रश्नों की मीमांशा विचारवान् लोग निरन्तर करते रहते हैं। वे बताते हैं कि राष्ट्र और समाज का हित इन सिद्धान्तों का पालन करने से किस प्रकार प्राप्त होगा। इस प्रकार विचारवान् पुरुषों द्वारा निर्धारित सिद्धान्त ही उस राष्ट्र का तत्वज्ञान बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, हिटलरकालीन जर्मनी का राष्ट्रीय तत्वज्ञान एक भिन्न प्रकार का था जो आर्यन रक्त की श्रेष्ठता पर आधारित था, तो स्टालिनकालीन रुस का तत्वज्ञान रक्त पर अवलम्बित न होकर समाज की संस्कृति को आर्थिक आधार पर नियमित करना चाहता था। इस दृष्टि से भारत के राष्ट्रीय तत्वज्ञान को निर्धारित करने वाला महाभारत जैसा और कोई ग्रन्थ है। यह अद्वितीय राष्ट्र-ग्रन्थ है। वेद महान् ग्रन्थ है। वे तो सृष्टि के आदि के होने के कारण ज्ञान-विज्ञान के मूल स्रोत हैं ही, किन्तु भारतीय समाज के सभी वर्ण, सभी जातियां और भी आबाल-वृद्ध-नर-नारियों का जैसा समावेश इस ग्रन्थ में है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। आचार-विचार, गृह-व्यवस्था, नीति, कल्पना, व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार, यहां तक कि हमारे रक्त के प्रत्येक कण में महाभारत के संस्कारों की छाया परिलक्षित होती है। इसलिए हम महाभारत को भारत के राष्ट्र-धर्म का प्रतिपादक ग्रन्थ कहते हैं। यह ग्रन्थ किन्हीं काल्पनिक कथाओं का पिटारा न होकर जैसे कि पुराण है - उनसे भिन्न एक जीवित इतिहास-ग्रन्थ है। अतीत की सत्यगाथा, भविष्य की थाती और वर्तमान का आधार-सम्पूर्ण इतिहास इसमें समाहित है। यह सत्य है कि इतिहास के साथ-साथ यह काव्य भी है और काव्य में होनोक्ति, वक्रोक्ति, अन्योक्ति या अत्युक्ति अलंकार का रुप ग्रहण करती है। इसलिए इस महान् ग्रन्थ में कुछ अद्भुत अमानवीय और अलौकिक घटनाओं का भी वर्णन मिलता है। इस अलौकिकता के चक्कर में हमारी कितनी ही निरीक्षण का यत्न किया जाय और काव्य के अलंकारों को छोड़कर खरे इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया जाय तो कठोरतम दृष्टि से जांचने पर हमारा सप्रमाण सिद्ध होने वाला गौरवशाली इतिहास भी महाभारत में विद्यमान है।

हम कचरा फैलाते रहेंगे, नियम नहीं मानेंगे
रचनात्मकता का सम्मान नहीं करेंगे,
तो अच्छे दिन नहीं आएंगे।

-: शिक्षक दिवस 5 सितम्बर :-

प्रासंगिकता - शिक्षक दिवस की

- ले. मनुदेव "अभय", एम.ए., बी.एड.

प्रतिवर्ष की भांति शिक्षक-दिवस पुनः नूतन सन्देश लेकर उपस्थित हो गया है । आज इस महान देश के राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का जन्म दिवस भी है । इसी दिन उनका सन् 1886 ई. में तिरुतणी (तमिलनाडू) नामक गांव में जो कि चैन्नई (मद्रास) से मात्र 50 कि.मी. दूर है, हुआ था । इनके माता-पिता अत्यन्त ही धार्मिक अभिरुचि के थे । फलतः इनके पूर्व जन्म के सुसंस्कार तथा माता-पिता की सतोगुणी मनोवृत्ति का बड़ा सुन्दर प्रभाव इस बालक पर पड़ा । डॉ. राधाकृष्णन् जो कि स्वतन्त्र भारत के द्वितीय राष्ट्रपति थे, आधुनिक भारत के सबसे अधिक यशस्वी शिक्षक माने जाते हैं । इन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा से विश्व के अनेक मूर्धन्य लोगों को अपनी विद्वता से प्रभावित किया था । वे अत्यन्त मेधावी छात्र रहे तथा तिरुपति बैंगलोर तथा मद्रास (चेन्नई) में शिक्षा प्राप्त कर उनसे सम्मान प्राप्त किया था । वे मद्रास में प्रेसीडेन्सी कालेज में सहायक प्राध्यापक बने। 1926 में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (इंग्लैण्ड) में स्फान्डिंग प्रोफेसर नियुक्त हुए । वे आंध्र विश्वविद्यालय तथा बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के कुलपति रहे । 1948 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अध्येक्ष बने । सन् 1952 से 1962 तक भारत के उपराष्ट्रपति उपाधि से अलंकृत किया गया । 5 सितम्बर 1967 में भारतीय डाक तार विभाग ने उनके सम्मान में एक विशेष डाक टिकट जारी किया। यह सदा स्मरणीय तथ्य है कि तभी से इस दिन 5 सितम्बर शिक्षक दिवस मनाने की परिपाटी प्रचलित है ।

डॉ. राधाकृष्णन् दर्शन-शास्त्र के प्रकाण्ड पंडित जाने जाते थे । इन्होंने भारतीय सांस्कृतिक निधि का मूल्यांकन करने में विश्व के छोटे-बड़े असंख्य लोगों को मूल्यवान सहायता की । इनकी वाणी भी बड़ी प्रखर थी कि अपने शान्त और मृदुल स्वभाव से सबको प्रभावित कर देते थे । कभी-कभी विषम परिस्थिति उत्पन्न होने पर ये मौन धारण कर तटस्थता का परिचय देकर सबको चमत्कृत कर देते थे । ये सन् 1949 से 1956 तक रुस में भारत के राजदूत रहे । कहते हैं तानाशाह स्टालिन तक इनकी विद्वता, सौम्यता व विश्वबन्धुता की भावना से द्रवीभूत होकर इनका बड़ा सम्मान करता था। एक बार स्टालिन से भेट होने पर इन्होंने उसके सम्मुख भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का मनोहारी वक्तव्य दिया था तथा स्पष्टरुप से कहा था कि रोटी, कपड़ा और मकान का उद्घोष अधूरा सत्य है । पूरा सत्य तो यह है कि रोटी, कपड़ा और मकान, शिक्षा, रक्षा, न्याय और भगवान यह सुनकर स्टालिन अवाक रह गया । वे 1952 में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन की महासभा के अध्यक्ष भी रहे । इनकी मृत्यु 16 अप्रैल 1975 को हुई । उनके गुणों की प्रशंसा करते एक विद्वान् ने ठीक ही लिखा है - डॉ. राधाकृष्णन् गौतम बुद्ध की तरह हृदय में अपार करुणा लेकर आये थे, उनका दीप्तिमय तथा उज्ज्वल आलोक भारत के आकाश में तो फैला ही विश्व की धरती भी उनकी प्रखर रश्मियों के स्पर्श से धन्य हो गई । इस प्रकार ऐसी श्रेष्ठ और पवित्र आत्मा की पुण्य स्मृति में उनके जन्म दिवस को शिक्षक दिवस के रुप में माना और आदरणीय और शिक्षा जगत के लिए प्रेरणादायी बन गया है ।

यह कहते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि इस दिन प्रत्येक वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले उद्भट विद्वान शिक्षकों का सम्मान समारोह पूर्वक किया जाता है । अभी तक असंख्य शिक्षा-विदों, जिनमें शिक्षक और शिक्षिकाएं आदि सभी

सम्मिलित हैं का राष्ट्रीय सम्मान कर अनेकों प्रेरणाएं दी जा रही है । यहां यह ध्यान रखना है कि संख्याबल की अपेक्षा गुणात्मक-बल अधिक महत्वपूर्ण और सफलदायी होता है । यह कितने खेद की बात है कि इस राष्ट्र में पिछले 77 वर्षो से हम लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति और प्रणाली का बोझ ढोते आ रहे हैं । यों तो प्रत्येक राष्ट्र का अपना शिक्षा-विधान होता है, पाठ्यक्रम पुस्तकें, विषय और विषय वस्तु आदि में राष्ट्रीयता की झलक प्रतिबिम्बित होती है, परन्तु छः दशक व्यतीत हो जाने के बाद इस विषय में कोई पहल नहीं की गई। यहां तक कि शिक्षार्थियो के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा के मूल तत्वों को इसलिए दूर रखा गया कि वे उच्च और मानवीय मूल्यों का वर्णनधारी वैदिक कालीन पुस्तकों तथा ग्रन्थो में है । आरक्षण और संरक्षण के ताने बुनने वाली सरकार को हमारे संस्कृत ग्रन्थों में साम्प्रदायिकता की दुर्गन्ध आने लगती है, क्योंकि इससे इनके कथित अल्पसंख्यक समुदाय मुस्लिम-ईसाई की धार्मिक भावनाओं पर ठेस लगती है । यह बात प्रत्योक शिक्षा-विद् को इसलिए बुरी लगती है कि सरकार शिक्षा के क्षेत्र में सीधा हस्तक्षेप कर अपनी राजनैतिक अभिलिप्सा पूर्ण करना चाह रही है । नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में मुस्लिमों-ईसाईयों के भय से दूर रखा गया था । इसका दुष्परिणाम है कि आज देश उपद्रव, हड़ताल, हत्या, आगजनी, संयुक्त परिवारों का विघटन तथा वृद्ध माता-पिता की पूर्ण उपेक्षा आदि समस्याओं से पूरी तरह पीड़ित है ।

हमारे देश में प्राचीनकाल से ही गुरु-पूर्णिमा, संस्कृत शिक्षा दिवस, यज्ञोपवीत, संस्कारोपरान्त गुरुकुल परिवेश तथा समावर्त्तन संस्कार प्रचलित रहे हैं । पंचायत पूजा के अन्तर्गत 1. माता, 2. पिता, 3. गुरु, 4 अतिथि तथा विद्वान संन्यासियों के आदर करने की परम्परा रही है । आचार्य तथा गुरु को मोक्ष प्राप्ति का निदेशक मानकर उन्हें एक साधन माना है । मनुस्मृति में कहा है -

न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः ।
यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः ।।
2/156

स्त्रियो रत्नान्यथो विद्या धर्मः शौचं सुभाषितम् ।
विविधानि च शिल्पानि समादेयानि सर्वतः ।।
2/240

संक्षेप में इन दोनों श्लोकों का भावार्थ यह है कि वयोवृद्ध की अपेक्षा ज्ञान वृद्ध पूजा के योग्य है । स्त्रियां, रत्न, विद्या, धर्म, पवित्रता, सुभाषित और विविध प्रकार के कला-कौशल सब ओर से लेने योग्य है । इसी महती कड़ी में शिक्षक दिवस का समायोजन भी स्वागत योग्य है । यह समारोह अत्यन्त भव्यता के साथ मनाया जाता है तथा परिश्रमी, उद्यमी, योग्य एवं विद्वान् शिक्षकों का स्थानीय, प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित कर उन्हें उच्च उपाधियों से अलंकृत किया जाता है तथा परिश्रमी, उद्यमी, योग्य एवं विद्वान् शिक्षकों का स्थानीय, प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित कर उन्हें उच्च उपाधियों से अलंकृत किया जाता है । इससे शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक समुदाय को प्रेरणा तथा कर्त्तव्य-निष्ठा की प्रेरणा प्राप्त होती है । समाज तथा राष्ट्र को भी शिक्षकों के सम्मान करने का सुअवसर प्राप्त होता है । शिक्षकों के कल्याण के लिए शिक्षक कल्याण निधि संगृहीत की जाती है । अब तो अनेक स्थानों पर शिक्षक सदन, शिक्षक कल्याण संस्थान भी स्थापित होने लगे हैं । जहां सारे प्रयास स्वागत योग्य माने जाते हैं । शिक्षकों के चयन के लिए संख्यात्मक होने की अपेक्षा गुणात्मक तत्व को प्रधानता दी जानी चाहिए । शिक्षकों में नौकरी की मनोवृत्ति के स्थान पर राष्ट्र को नैतिक स्तर पर ऊँचा उठाने के लिए मिशनरी स्पिरिट का लक्ष्य रखना होगा ।

पता : अ-सुकिरण, अ/13, सुदामा नगर, इन्दौर

सर्वेषामेव दानानां
ब्रह्मदानं विशिष्यते ।

सब दानों से विद्यादान श्रेष्ठ है ।

विचारात्मक

"मानव जीवन मिलना ईश्वर की हम पर सबसे बड़ी कृपा"

हमें मनुष्य का जीवन मिला हुआ है। इस जीवन को प्राप्त करने में हमारे माता-पिता का योगदान निर्विवाद रहे, परन्तु इसके साथ ही हमारी आत्मा और शरीर का सम्बन्ध कराने वाला सच्चिदानन्दस्वरुप, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान परमात्मा है। यदि परमात्मा न होता तो न तो यह सृष्टि अस्तित्व में आती और न ही इस सृष्टि में प्राणी जगत का अस्तित्व होता। परमात्मा इस सृष्टि का निमित्त कारण है और उसने ही अपनी सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमता से अनादि, नित्य, अमर तथा नशारहित जीवात्माओं को उनके पूर्वजन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों का सुख व दुःखरुपी फल देने के लिये ही इस संसार की रचना की है और वही इसका पालन व संचालन कर रहे हैं। सृष्टि का उपादान कारण जड़ प्रकृति है जो प्रलयावस्था में अत्यन्त सूक्ष्म व सत्व, रज एवं तम गुणों वाली होती है। हम सभी मनुष्यों को ईश्वर को जानना है और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करना है जिससे हम अपने जीवन में दुःखों से बचे रहे और मृत्यु के बाद हमें मोक्ष प्राप्त हो सके। यदि हम मोक्ष की अर्हता पूरी न कर सकें तब भी हमें श्रेष्ठ मनुष्यों की देवयोनि में जन्म मिले जहां रहते हुए हम पुनः मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करें और उसे प्राप्त कर लें। जन्म व मृत्यु की पहेली को समझने के लिये सभी मनुष्यों को ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश आदि समस्त ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश में अनेक विषयों पर जो विस्तृत ज्ञान है वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है और यदि कुछ है भी तो उसके लिये जिज्ञासु बन्धुओं को अनेक संस्कृत के वैदिक

– मनमोहन कुमार आर्य

ग्रन्थों को पढ़ना होगा। सत्यार्थ प्रकाश का महत्व यह है कि प्रायः सभी इष्ट विषयो का ज्ञान इस ग्रन्थ को पढ़कर 4-5 दिनों में ही हमें प्राप्त हो जाता है जिसमें सृष्टि व ईश्वर जीवात्मा विषयक प्रायः सभी रहस्य सम्मिलित हैं। इसी कारण वेद मनीषी पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने कहा था कि उन्होंने अपने जीव न में लगभग 18 बार ऋषि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ पढ़ा उन्होंने यह भी कहा है कि यदि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के लिए उन्हें समस्त भौतिक सम्पत्ति बेचनी पड़ती तब भी वह सहर्ष इस पुस्तक को प्राप्त करते। सत्यार्थ प्रकाश का महत्व वर्णनातीत है। इसकी महत्ता एवं उपयोगिता को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

संसार में तीन अनादि, अमर तथा नित्य सत्तायें ईश्वर, जीव और प्रकृति हैं। हम जीव हैं और हमारी ही तरह अनन्त जीवात्मायें इस ब्रह्माण्ड में हैं। हम जीवात्मा हैं और हमारा शरीर पंचभौतिक पदार्थों के संयोग से बना है। यह संयोग ईश्वर के बनाये नियमों व व्यवस्था के द्वारा होता है। जिसकी उत्पत्ति होती है उसका विनाश भी होता है और जिसकी उत्पत्ति नहीं हुई उसका विनाश कभी नहीं होता। इसी कारण शरीर नाशवान अर्थात् मरणधर्मा है जबकि हमारी आत्मा अनादि, नित्य, अविनाशी और अमर है। हमारे इस शरीर के जनम से पूर्व भी आत्मा का अस्तित्व था। हमारे इस शरीर के मृत्यु को प्राप्त होने पर भी हमारी आत्मा का असित्तत्व बना रहता है। ईश्वर अजन्मा है और इसके विपरीत जीवात्मा जन्म-मरण धर्मा है। इस जन्म से पूर्व भी हम अर्थात् हमारी जीवात्मा अपने पूर्वजन्म में उस जन्म के भी पहले के जन्मों के अभुक्त

कर्मों के अनुसार किसी प्राणी योनि में इस ब्रह्माण्ड में कहीं इस पृथ्वी के अनुरुप ग्रह पर जीवन व्यतीत कर रहे थे और ऐसा ही हमारे इस वर्तमान जीवन की मृत्यु के बाद भी होगौ। परमात्मा की हम पर कृपा होने से वह हमारे इस जन्म व पूर्वजन्मो के अभुक्त कर्मों के अनुसार जन्म देता है और कर्मों के अनुसार ही हमारी जाति (मनुष्य, पशु वा पक्षी आदि) आयु और भोग (सुख व दुःख) निश्चित होते हैं। यदि परमात्मा व प्रकृति में से, दोनो अथवा कोई एक या दोनो ही न होते तो हमारा जन्म व मरण नहीं हो सकता था और न ही हम किसी प्रकार के सुख व दुःखों का भोग कर सकते थे। हममें से कोई प्राणी दुःख नहीं चाहता, सभी प्राणी सुख, शान्ति व सुरक्षा चाहते हैं। सुखों का आधार शुभ व श्रेष्ठ कर्म है। अतः हमें अशुभ व पाप कर्मों को करना छोड़ना होगा। यदि हम पाप कर्मों को करना पूर्णतः छोड़ देंगे तो हमें दुःख प्राप्त नहीं होंगे और हम सुखपूर्वक इस जीवन को व्यतीत कर अगले जन्म में भी सुखी व श्रेष्ठ मानव जीवन प्राप्त कर देवकोटि की मनुष्य योनि में जन्म लेकर सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

परमात्मा ने हमारे मार्गदर्शन व कर्त्तव्यों की प्रेरणा करने के लिये ही सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे पूर्वज ऋषियों व विद्वानों ने वेद व इसके सत्य अर्थों की रक्षा की और इस कल्प में हमारी आत्मा लगभग 1.96 अरब वर्षों की यात्रा करते हुए वर्तमान जीवन तक पहुंचे हैं। इस रहस्य का ज्ञान कराने में महर्षि दयानन्द जी का बहुत बड़ा योगदान है। हम सबके उनके ऋणी हैं। उन्हीं के कारण हम अपने इस जीवन में वेद, सत्यासत्य कर्मों के स्वरुप सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष तथा इसकी प्राप्ति के उपाय ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र व सदाचरण आदि को जान सके हैं। हमें सुख व प्रसन्नता आदि जो भी अनुभूतियां प्राप्त होते हैं वह सब ईश्वर हमें हमारे ज्ञान एवं कर्मों के अनुरुप प्रदान करते हैं। हमें सदैव स्वयं को ईश्वर का ऋणी व कृतज्ञ अनुभव करना है और वेदाध्ययन सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों एवं अन्य विपुल वैदिक साहित्य का अध्ययन करते रहकर सन्मार्ग का अनुगमन करना है।

यदि हम अपने कर्मों को देखें तो हम पाते हैं कि अपने एक-एक कर्म को ज्ञान का मार्ग रखना कितना कठिन है। हम स्वयं ही अपने अतीत के अनेक कर्मो को भूल जाते हैं। ईश्वर हमारे इस जन्म व पूर्वजन्मों के किसी कर्म को नहीं भूलता। ईश्वर का यह गुण हमें उसके प्रति समर्पित होकर उपासना करने के लिये प्रेरित करता है। हमने कुछ दिन पहले फेसबुक पर एक मन्त्र व उसके मन्त्रार्थ को पढ़ा जिसमें कहा गया है कि हम दिन में कितनी बार पलक झमकते और कितनी बार आंखे खोलते हैं, इसका पूरा-पूरा हिसाब परमात्मा को पता होता है। हमारे छोटे, बड़े सभी कर्मों, चाहे वह दिन के प्रकाश में किये गये हों या रात्रि के अन्धेरे में अथनवा सबसे छुप कर किये गये हों, परमात्मा उन सभी कर्मों को यथावत् जानता है और समयानुसार उनका फल कर्म करने वाले कर्ता को देता है। ईश्वर का यह गुण हमारे भीतर रोमांच उत्पन्न करता है। इसी कारण हमारे सभी विद्वान्, योगी व ऋषि न तो स्वयं कभी कोई अशुभ व पाप कर्म करते थे और न ही किसी अन्य को करने की प्रेरणा करते थे। हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने व इसके लिए मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये ऋषि दयानन्द के अनेक विद्वानों द्वारा लिखे गये जीवन चरितों सहित स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, पं. लेखराम आर्य मुसाफिर, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराम, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती आदि महापुरुषों की जीवनियों व आत्मकथाओं को पढ़ना चाहिए। इससे हमें सद्कर्मों को करने की प्रेरणा मिलने के साथ असत्य के त्याग करने का बल भी प्राप्त होगा।

हम ईश्वर की कृपा को इस रुप में भी अनुभव करते हैं कि जब सन् 1825 के दिनों में सारा देश अज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान से भ्रमित व अन्धविस्वासों

व कुपरम्पराओं से ग्रस्त था, तब उस परमात्मा ने कृपा करके तत्कालीन व भावी सन्ततियों के लिये वेदज्ञान से परिपूर्ण ऋषि दयानन्द को इस देश में भेजा था, जिन्होंने स्थान-स्थान पर जाकर वेदों का प्रचार कर अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर किया था। ऋषि दयानन्द ने जड़ मूर्ति पूजा की निरर्थकता से हमारा परिचय कराया था और फलित ज्योतिष की निर्मूलता व निरर्थकता से भी हमें सावधान रहने के लिये कहा था। अवतारवाद को उन्होंने अवैदिक व असत्य कल्पना करार दिया था और मृतक श्राद्ध को उन्होंने तर्क व युक्ति से असिद्ध घोषित किया था। उन्होंने स्त्री व शूद्रों सहित मनुष्यमात्र को वेदाध्ययन का अधिकार दिया और आर्यसमाज गठित करके आर्य समाज के 10 स्वर्णिम नियम हमें दिये थे। ऋषि दयानन्द ने हमें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि आदि एक दर्जन से अधिक ग्रन्थ दिये जिन्हें पढ़कर हम अपने जीवन को ऊंचा उठा सकने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। उनकी कृपा से ही आज हम व लाखों लोग असत्य मत व मार्ग को त्याग कर सत्य व कल्याण पथ को ग्रहण कर सके हैं। इस जीवन में हमें वेद सहित ऋषि दयानन्द और प्राचीन ऋषियों के ग्रन्थ 6 दर्शन, 11 उपनिषद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत सहित वैदिक विद्वानों के शताधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थों के अध्ययन का सुअवसर व सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हम अनुभव करते हैं यदि ऋषि दयानन्द जी न आये होते तो हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि हम वैदिक सनातन धर्म में बने रहते भी या नहीं ? देश में धर्मान्तरण की जो आंधी विधर्मियों द्वारा चलाई गई थी उसे वेद प्रमाण, तर्क एवं युक्तियों से ऋषि दयानन्द और उनके बाद उनके अनुयायियों ने ही रोका था। हमें यह सब कार्य ईश्वर के द्वारा प्रेरित प्रतीत होते हैं। यदि ईश्वर हमारे महापुरुषों को प्रेरणा व शक्ति न देते तो आज देश और विश्व का स्वरुप वह न होता जो आज है। इस कार्य के लिये ईश्वर एवं ऋषि दयानन्द का कोटिशः वन्दन करते हैं। हमें वेद, उपनिषद, दर्शन एवं सत्यार्थप्रकाश आदि ऋषि ग्रन्थों का प्रचार कर वेदाक्य कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् विश्व को श्रेष्ठ बनाने के विचार वा आज्ञा को सार्थक करना है।

परमात्मा ने हमें मनुष्य जन्म देने सहित भारत भूमि और वह भी एक वैदिक धर्मी वा सनातन धर्मी परिवार में जन्म देकर हम पर जो उपकार किया, हम उसका भी सही मूल्यांकन नहीं कर सकते। भारत में जन्म लेकर हम ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से जुड़े हैं, यह भी ईश्वर की हम पर महती दया एवं कृपा है। हम सब आर्य भाई-बहिन इसके लिये ईश्वर के अतीव आभारी हैं। हम वैदिक साहित्य और वेद एवं ऋषियों की प्रेरणा के अनुरुप आचरणों से सदैव जुड़े रहें और ईश्वर की वेदाज्ञा का लोगों में प्रचार करते रहें, इसके लिए ईश्वर हमें शक्ति प्रदान करें।

पता : 196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248002

कटु-तथ्यात्मक

धन की भूख और विश्रान्ति एक साथ नहीं

– **डॉ. ज्ञानप्रकाश,** सेवानिवृत्त प्रोफेसर

टॉलस्टॉय की प्रसिद्ध कहानी है कि एक आदमी के घर एक संन्यासी मेहमान हुआ – एक परिव्राजक। राथ गपशप होने लगे, उस परिव्राजक ने कहा कि तुम यहां क्या छोटी–मोटी खेती में लगे हो। साइबेरिया में मैं यात्रा पर था तो वहां जमीन इतनी सस्ती है कि मुफ्त ही मिलती है। तुम यह जमीन छोड़–छाड़कर, बेच–बाचकर साइबेरिया चले जाओ। वहां हजारों एकड़ जमीन मिल जाएगी इतनी जमीन में। वहां करो फसलें और बड़ी उपयोगी जमीन है और लोग वहाँ के इतने सीधे–सादे हैं कि करीब–करीब मुफ्त ही जमीन दे देते हैं। उस आदमी को वासना जगी। उसने एक दूसरे दिन ही सब बेच–बाचकर साइबेरिया की राह पकड़ी। जब पहुंचा तो उसे बात अच्छी मालूम पड़ी। उसने पूछा कि मैं जमीन खरीदना चाहता हूँ। तो उन्होंने कहा, जमीन खरीदने का तुम जितना पैसा लाए हो, रख दो, और जीवन का हमारे पास यही उपाय है कि बेचने का कि कल सुबह सूरज के ऊगते तुम निकल पड़ना और सांझ सूरज डूबते तक जितनी जमीन तुम घेर सको घेर लेना। बस चलते जाना.. जितनी जमीन तुम घेर लो। सांझ सूरज के डूबते–डूबते उसी जगह पर लौट आना जहां से चले थे– बस यही शर्त है। जितनी जमीन तुम चल लोगे, उतनी जमीन तुम्हारी हो जाएगी। रात–भर तो सो न सका वह आदमी। तुम भी होते तो न सो सकते, ऐसे क्षणों में कोई सोता है ? रात भर योजनाएं बनाता रहा कि कितनी जमीन घेर लूं. सुबह ही भागा। गाँव इकट्ठा हो गया था। सुबह का सूरज ऊगा, वह भागा। उसने साथ अपनी रोटी भी ले ली थी, पानी का भी इंतजाम कर लिया था। रास्ते में भूख लगे, प्यास लगे तो सोचा था चलते ही चलते खाना भी खा लूंगा, पानी भी पी लूंगा। रुकना नहीं है, चलना क्या है दौड़ना है। दौड़ना शुरु किया, क्योंकि चलने से तो आधी ही जमीन कर पाऊंगा, दौड़ने से दुगनी हो सकेगी – भागा... भागा।

सोचा था कि ठीक बारह बजे लौट पड़ूं ताकि सूरज डूबते–डूबते पहुंच जाऊँ। बारह बज गए, मीलों चल चुका है, मगर वासना का कोई अंत है ? उसने सोचा कि बारह तो बज गए, लौटना चाहिए, लेकिन सामने और उपजाऊ जमीन और उपजाऊ जमीन... थोड़ी सी और घेर लूं। जरा तेजी से दौड़ना पड़ेगा लौटते समय – इतनी ही बात है, एक ही दिन की तो बात है, और जरा तेजी से दौड़ लूंगा।

उसने पानी भी न पीया, क्योंकि रुकना पड़ेगा उतनी देर–एक दिन की ही बात है, फिर कल पी लेंगे पानी, फिर जीवन भर पीते रहेंगे। उस दिन उसने खाना भी न खाया। रास्ते में उसने खाना भी फेंक दिया, पानी भी फेंक दिया, क्योंकि उनका वचन भी ढोना पड़ रहा है, इसलिए दौड़ ठीक से नहीं पा रहा है। उसने अपना कोट भी उतार दिया, अपनी टोपी भी उतार दी, जितना निर्भार हो सकता था हो गया।

एक बज गया, लेकिन लौटने का मन नहीं होता, क्योंकि आगे और–और सुंदर भूमि आती चली जाती है। मगर फिर लौटना ही पड़ा, दो बजे तक वो लौटा। और घबराया। सारी ताकत लगाई, लेकिन ताकत तो चुकने के करीब आ गई थी। सुबह से दौड़ रहा था, हॉफ रहा था, घबरा रहा था कि पहुंच पाऊंगा सूरज डूबते तक की नहीं। सारी ताकत लगा दी। पागल होकर दौड़ा। सब दाँव पर लगा दिया और सूरज डूबने लगा.. । ज्यादा दूरी भी नहीं रह गई है, लोग दिखाई पडने लगे। गाँव के लोग खड़े हैं और आवाज दे रहे हैं कि आ जाओ, आ जाओ। उत्साह दे रहे हैं, भागे आओ। अजीब सीधे–सादे लोग हैं – सोचने लगा मन मैं इनको तो सोचना चाहिए कि मैं मर ही जाऊं तो इनका धन भी मिल जाए और जमीन भी न जाए। मगर वे बडा उत्साह दे रहे हैं कि भागे आओ।

उसने आखिरी दम लगा दी- भागा-भागा। सूरज डूबने लगा, इधर सूरज डूब रहा है, उधर वो भाग रहा है..। सूरज डूबते-डूबते बस जाकर गिर पड़ा। कुछ पांच-सात गज की दूरी रह गई है, घिसटने लगा।

अभी सूरज की आखिरी कोर क्षितिज पर रह गई, घिसटने लगा। और जब उसका हाथ उस जमीन के टुकड़े पर पहुंचा, जहां से भागा था, उस खूंटी पर, सूरज डूब गया। वहां सूरज डूबा, यहां यह आदमी भी मर गया। इतनी मेहनत कर ली.। शायद हृदय का दौरा पड़ गया। और सारे गांव के सीधे-सादे लोग जिनको वह समझाता था, हंसने लगे और एक-दूसरे से बात करने लगे। ये पागल आदमी आते ही जाते हैं। इस तरह के पागल लोग आते ही रहते हैं। यह कोई नई घटना न थी, अक्सर लोग आ जाते थे खबरे सुनकर और इसी तरह मरते थे। यह कोई अपवाद नहीं था, यही नियम था। अब तक ऐसा एक भी आदमी नहीं आया था, जो घेरकर जमीन का मालिक बन पाया हो।

यह कहानी तुम्हारी कहानी है, तुम्हारी जिंदगी की कहानी है, सबकी जिंदगी की कहानी है। यही तो तुम कर रहे हो-दौड़ रहे हो कि कितनी जमीन घेर लें। बारह भी बज जाते हैं, दोपहर भी आ जाती है, लौटने का भी समय होने लगता है - मगर थोड़ा और दौड़ लें। न भूख की फिक्र है, न प्यास की फिक्र है।

जीने का समय कहाँ है, पहले जमीन घेर लें, पहले तिजोरी भर लें, पहले बैंक में रुपया इकट्ठा हो जाए, फिर जी लेंगे, फ़िर बाद में जी लेंगे, एक ही दिन का तो मामला है। और कभी कोई नहीं जी पाता। गरीब मर जाते हैं, भूखे, अमीर मर जाते हैं भूखे, कभी कोई नहीं जी पाता। जीने के लिए थोड़ी विश्रांति चाहिए। जीने के लिए थोड़ी समझ चाहिए। जीवन मुफ्त नहीं मिलता-बोध चाहिए।

पता : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

स्वर्णिम-सन्देश जीवन में सुखी होकर जीना हो, तो ये चार उपाय मुख्य हैं

(1) कभी भी उत्साह में आकर दूसरों को ऐसा वचन मत दीजिए, जिसे आप निभा न पाएं। किसी को भी वचन देने से पहले, अपने सामर्थ्य को देखें, कि हमारा सामर्थ्य कितना है ? अनेक बार व्यक्ति भावुकता में आकर ऐसा वचन दे बैठता है, जिसे पूरा करने में या तो बहुत कठिनाई होती है या पूरा कर ही नहीं पाता। यदि ऐसी स्थित रहेगी तो आप निश्चित रुप से दुखी होंगे।

(2) जब आप लोगों के साथ बात करते हैं, तो सीमा में रहकर बात करनी चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपनी क्षमता से अधिक बढ़ चढ़कर बातें कहता रहता है। जिसे सामान्य भाषा में शेखी बघारना या शेखी मारना कहते हैं। अर्थात् ऐसी बातें न कहें, जिन पर दूसरे लोग विश्वास न करें। बल्कि ऐसी बातें करें या कहें, कि जो आपके सामर्थ्य के अनुकूल हों। जिन बातों पर दूसरे लोग विश्वास भी कर सकें, कि हां, यह काम आपने किया होगा, इस प्रकार से अपने सामर्थ्य की सीमा में रहकर बात करें।

(3) आप बहुत उन्नति करने की इच्छा रखें, इसमें कोई बुराई नहीं है। ऊंची ऊंची योजनाएं बनाएं। यह अच्छी बात है, उन्हें पूरा करने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ भी करें। यह तो ठीक है।

(4) चौथी बात यह है कि अपनी उन्नति करने के लिए दूसरे की हानि न करें, दूसरे व्यक्ति को गिराने का विचार कभी न करें। किसी की टांग न खीचें। किसी पर झूठा आरोप लगाकर व्यर्थ ही उसे बदनाम न करें। यह भयंकर पाप है। और ऐसे भयंकर पापों का दंड भी भयंकर ही मिलता है। इसलिए ईश्वर माता पिता और गुरुजनों आदि के दंड को सदा याद रखें। तभी ऐसे पापों से बच पायेंगे, और उत्तम कर्म करके अपने जीवन को सफल बना पाएंगे। और तब ही आप सुख से जी पाएंगे।

- स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, निदेशक : दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, गुजरात

शोधात्मक

“विकास के कारक”

– अजय शर्मा, विज्ञान-प्रशिक्षक

आईए ! एक प्रयोग करते हैं आप अपने घर के बाहर निकलिए और चारों ओर निहारिए अंदाज लगाएं आप कितनी दूर तक देख सकते हैं ? अब किसी बहुमंजिला भवन की पहली मंजिल पर जाइये और चारों तरफ देखिये । क्या आपकी दृष्टि के दायरे में आपने कुछ अंतर पाया ? अब भवन की दूसरी मंजिल पर जाइये और अपना अवलोकन दुहराइये । आपका अनुभव क्या रहा ? जैसे जैसे ऊपर की मंजिल पर जाते हैं आपकी दृष्टि का दायरा विस्तृत होता है या फिर सिमटता है ? सही कहा दायरा विस्तृत होता है । हमारा अनुभव कहता है कि जैसे जैसे इंसान ऊपर उठता है उसका अवलोकन का दायरा बढ़ता जाता है उसकी दृष्टि विस्तारित होती है । आपने बच्चों को गुब्बारे से खेलते हुए देखा होगा । गुब्बारे दो तरह के होते हैं एक तोवे जिनमें फूक करके सामान्य हवा भरी जाती है और दूसरा वह गुब्बारा जिसमें हाईड्रोजन गैस भरी जाती है । दोनों गुब्बारों को स्वतन्त्र छोड़ने पर एक ऊपर उठता है और दूसरा नीचे गिरता है । क्या आप बता सकते हैं कि कौन सा गुब्बारा ऊपर उठता है और कौन सा गुब्बारा नीचे गिरता है ? बिल्कुल सही कहा आपने वह गुब्बारा जिसमें सामान्य हवा भरी होती है वह गुब्बारा नीचे गिरता है वह गुब्बारा जिसमें हाईड्रोजन गैस भरी जाती है वह ऊपर उठता है । प्रश्न उठता है ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिए क्योंकि हाईड्रोजन हल्की होती है इसलिए हाईड्रोजन गैस भरा गुब्बारा ऊपर उठता है, सामान्य हवा भारी होती है इसलिए वह गुब्बारा जिसमें सामान्य हवा भरी होती है नीचे गिरता है । क्या आपने विचार किया है कि किसी ज्वलनशील पदार्थ के जलने पर धुआँ ऊपर ही क्यों उठता है ? ऐसा इसलिए क्योंकि जलने पर उष्ण उत्पन्न होती है जिससे आसपास की हवा गर्म हो जाती है क्योंकि गर्म हवा ठंडी हवा से हल्की होती है इसलिए ऊपर उठती है । स्पष्ट है कि ऊपर उठने की पहली अनिवार्यता है हल्का होना । जो भी हल्का होगा वह उर्ध्वगमन करेगा । हम अपने आसपास समाज में जो व्यक्तियों पर चर्चा करते हैं उदाहरण के लिए फलाँ व्यक्ति ने ऐसा किया, फलाँ व्यक्ति ने ऐसा कहा, उसने मुझे नमस्कार नहीं किया, उसने मुझसे बात नहीं की वगैरह-वगैरह । इस वर्ग के लोगों की दृष्टि संकुचित होती है इनके अवलोकन और विचार का दायरा भी सीमित होता है । ये इंसानों में सबसे निम्न स्तर में आते हैं । दूसरे वर्ग में ऐसे लोग आते हैं जो अपने आसपास घटित होने वाली घटनाओं पर चर्चा करते हैं । उदाहरण स्वरुप आज मोदी जी ने रैली में आज ऐसा कहा, रुस ने युक्रेन पर फिर हमला किया, आज पाकिस्तान में महंगाई इतनी बढ़ गई वगैरह-वगैरह । इस वर्ग के लोगो की दृष्टि व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रहती । इनकी सोच का दायरा पहले वर्ग के व्यक्तियों की सोच के दायरे से उत्पन्न होता है । ये इंसानों में निम्न स्तर से ऊपर औसत स्तर में आते हैं । समाज

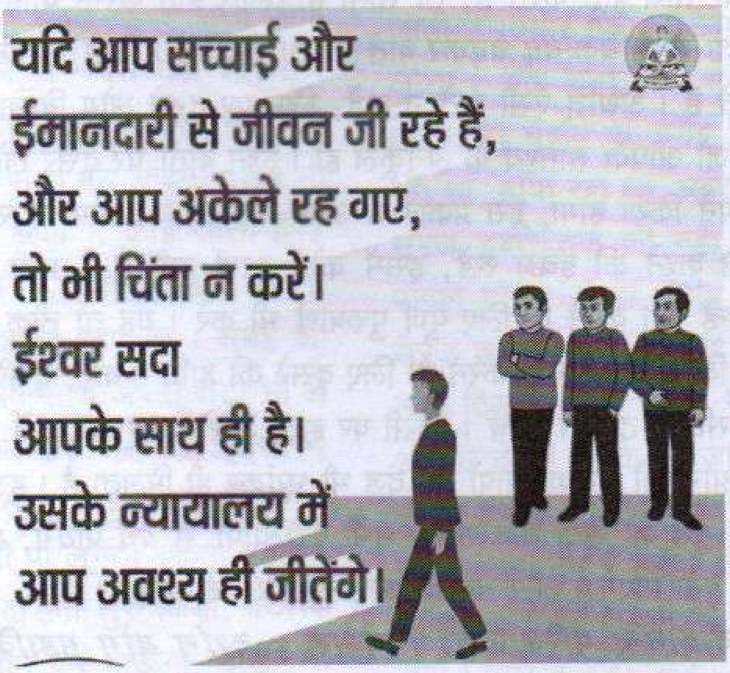

में पाए जाने वाले तीसरे वर्ग में वे लोग आते है जो न तो व्यक्तियों पर बात करते हैं और न ही घटनाओं की चर्चा करते हैं ये ऐसे लोग होते हैं जो समाज में व्याप्त समस्याओं पर बात करते हैं और उनके समाधान के विकल्पों पर चर्चा करते है । इस वर्ग के लोगों की दृष्टि और अवलोकन का दायरा विस्तृत होता है । यही लोग समाज को नेतृत्व प्रदान करते हैं और सामाजिक उत्थान, समरसता एवं मानवता के विकास के लिए कार्य करते हैं । अब तक की चर्चा में हमने पाया कि ऊपर उठने से दृष्टि और अवलोकन का दायरा विस्तृत होता है और वही ऊपर उठता है । प्रकृति के नियमों की खूबसूरती यही है कि वह सभी पर समान रुप से लागू होते हैं, जो प्रकृति के नियम सजीव या निर्जीव का कोई विभेद नहीं करते । अतः ये नियम मानव पर भी समान रुप से लागू होते हैं, जो प्रकृति में हल्का होगा वह ऊपर उठेगा और जो प्रकृति में भारी होगा वह नीचे रहेगा। उक्त विवेचन में जो मनुष्य निम्न स्तर पर बताए गए हैं उनमें स्वार्थ, लोभ, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध इत्यादि विकार प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं । ये वो कारक हैं जो व्यक्ति की दृष्टि और विचार क्षमता को सीमित करते हैं । ये वो कारक हैं जो व्यक्ति की दृष्टि और विचार क्षमता को सीमित करती है । ये कारक व्यक्ति को बंधन में डालते हैं । इन विकारों की उपस्थिति में व्यक्ति के देखने सोचने तथा समझने का दायरा संकुचित हो जाता है । परिणाम यह होता है कि व्यक्ति छोटी छोटी मूल्यहीन बातों में उलझकर अपना बहुमूल्य जीवन व्यर्थ गंवा देता है । स्वार्थ, लोभ, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध इत्यादि ऐसे विकार हैं जो व्यक्ति को भारी करते है और ऊपर उठने नहीं देते । समाज में वही व्यक्ति उर्ध्वगामी होता है जो इन विकारों से मुक्त होता है । आज आवश्यकता है आत्मावलोकन की । यदि हम अपने आप को प्रथम या द्वितीय स्तर पर पाते हैं तो हमें तृतीय स्तर पर आने का प्रयास करना चाहिए । और यदि स्वयं को तृतीय स्तर पर पाते हैं तो हमें इस बात पर गौरवान्वित होना चाहिए कि हम समाज को दिशा प्रदान करने के काबिल हैं और हमें समाज उत्थान व समाज कल्याण के कार्यों में उत्साहपूर्वक सहयोग कर भागीदारी निभानी चाहिए ।

पता - डी.ए.वी.स्कूल, हुडको-भिलाई

परिस्थिति की अस्वीकृति दुःख का कारण

युद्ध के मैदान पर सैनिक जाता है तो जब तक नहीं जाता, तब तक भयभीत रहता है । बहुत घबराया रहता है । बचाव की कोशिश में लगा रहता है कि किसी तरह बच जाऊं । लेकिन युद्ध के मैदान पर पहुंचता है । एक-दो दिन उसकी नींद खोई रहती है, सो नहीं पाता है, चौंक-चौंक उठता है । बम गिर रहे हैं, गोलियां चल रही है । पर दो-चार दिन के बाद आप दंग होंगे कि वही सैनिक, बम गिर रहे, गोलियां चल रही है, सो रहा है । वही सैनिक, लाशें पड़ी हैं, भोजन कर रहा है । वही सैनिक, पास से गोलियां सरसराती निकल जाती है, ताश खेल रहा है । क्या हो गया इसको ? एक बार युद्ध की स्थिति स्वीकृत हो गई, फेक्ट हो गया कि ठीक है, अब युद्ध है। बात खत्म हो गई । लंदन पर बमबारी दूसरे महायुद्ध में चलती थी । चिन्तित थे लोग कि क्या होगा ? लेकिन दो-चार दिन के बाद बमबारी चलती रही, स्त्रियां बाजार में सामान खरीदने निकलने लगी, बच्चे स्कूल पढ़ने जाने लगे। स्वीकृत हो गया । युद्ध एक तथ्य हो गया । ऐसा नहीं है कि युद्ध के मैदान पर वह जो लाश पास में पड़ी होती है वह लाश नहीं होती । और ऐसा भी नहीं है कि वह आदमी कठोर हो गया, अन्धा हो गया, बहरा हो गया, नहीं, वह आदमी वही है, लेकिन तथ्य की स्वीकृति सारी स्थिति को बदल देती है । अस्वीकार जब तक करेंगे, तब तक तथ्य आपको सताएगा । जिस दिन स्वीकार कर लेंगे, बात समाप्त हो गई । अगर मैंने ऐसा जान ही लिया कि शरीर के साथ मौत अनिवार्य है तो मौत का दुख नष्ट हो गया । मौत आएगी, मौत नष्ट नहीं हो गई - मौत आएगी ।

वैदिक दृष्टि

"विश्वकर्मा और वेद"

17 सितम्बर विश्वकर्मा जयंती पर विशेष

– आचार्य विष्णुदेव वेदार्थी

वैदिक वाङ्मय में विश्वकर्मा शब्द का व्यापक अर्थ है । यह शब्द गुणवाचक है व्यक्तिवाचक नहीं है । अतः इस शब्द से किसी निश्चित विश्वकर्मा का ज्ञान न होकर अनेक विश्वकर्माओं का ज्ञान न होकर अनेक विश्विकर्माओं का ज्ञान होता है । तथा सृष्टि रचियता परमिपता परमात्मा, शिल्पशास्त्र के आविष्कर्ता व सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता ऐतिहासिक महापुरुष विश्वकर्मा तथा सूर्य, वायु, अग्नि, पृथिवी व वाणी आदि जड़ चेतन रुप में विश्वकर्मा हैं ।

विश्वकर्मा वेद का शब्द है । यह वेद से लेकर ही लोक में प्रयुक्त हुआ । वेद के सभी शब्द यौगिक है अथवा योगरुढ़ि किन्तु कोई भी शब्द वेद में रूढ़ि नहीं है । वेद के प्रत्येक शब्द का अर्थ उस शब्द के अन्दर ही निहित है उसे समझने के लिए उस शब्द के अन्दर प्रविष्ट होना पड़ेगा । शब्द के अन्दर प्रविष्ट होकर उसके धातु, प्रत्यय का विभाग करके स्वाभाविक मूल अर्थ को जानने का नाम ही यौगिक प्रक्रिया है । वेदसम्मत इस यौगिक प्रक्रिया से शब्द का जो अर्थ जाना जाता है वह वास्तविक व अपरिमित होता है । इसके विपरीत वेद के शब्द से हटकर किसी भी निश्चित किए गए अन्य अर्थ से रूढ़ हो जाते हैं तब उन्हें रूढ़ि शब्द कहते हैं । उदाहरण के लिए एक लोक प्रसिद्ध शब्द पंकज का यौगिक अर्थ करने पर पंक अर्थात् कीचड़ में उत्पन्न होने वाले पौधे कमल आदि सभी को ग्रहण होता है किन्तु यदि वही पंकज नाम किसी व्यक्ति अथवा वस्तु का रख दें तो वह शब्द रूढ़ि ही कहलाएगा और अपने वास्तविक स्वाभाविक अर्थों को छोड़कर किसी निश्चित किए हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लिए संकुचित अर्थ में रूढ़ हो जाएगा । वेद का विश्वकर्मा का वाचक न होकर यौगिक प्रक्रिया से अपने स्वाभाविक अर्थ द्वारा सृष्टिरचियता परमपिता परमात्मा व उसके द्वारा रचित, सूर्य, वायु, अग्नि, आदि वैदिक वस्तुओं का बोध कराता है ।

वेद ईश्वरीयि ज्ञान है । परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ में जैसे कोई वाद्ययंत्र, बाजा बजाए या कठपुतली को चेष्टा कराये ठीक उसी प्रकार अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामक चार ऋषियों को साधन बनाकर सब मनुष्यों के हितार्थ अपने ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद का प्रकाश करता है । प्रभु वेदों का यह ज्ञान प्रत्येक सृष्टि के आरम्भ में ठीक इसी प्रकार का देता रहा है व सदैव देता रहेगा । उसमें कभी किञ्चित परिवर्तन नहीं करता । इस नित्य ज्ञान वेद में देशकाल आदि से सीमित किसी व्यक्ति, स्थान या इतिहास का वर्णन नहीं है । यदि वेद का ज्ञान सार्वकालिक अनादि व अनन्त है और महापुरुष उत्पत्ति व मरणधर्मी है तो नित्यज्ञान वेद में अनित्य महापुरुषों की कथा कैसे सम्भव है ? अतः हमें दशरथनन्दन राम, योगिराज कृष्ण व शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा आदि महापुरुषों का मानवीय इतिहास इतिहासादिक ग्रन्थों में ही ढूंढना चाहिए वेद में नहीं ।

वेद के विश्वकर्मा शब्द से ज्ञात परमपिता उसके द्वारा रचित सूर्य, वायु, अग्नि आदि विश्वकर्मा व ऐतिहासिक महापुरुष शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा ये समस्त ही विश्वकर्मा हमारे जिज्ञास्य हैं, हम इन्हें जानने का समुचित प्रयत्न करें । निरुक्तकार महर्षि यास्क विश्वकर्मा शब्द यौगिक अर्थ लिखते हैं– **"व्रिश्वानि कर्माणि येन यस्य वा स विश्वकर्मा, विश्वकर्मा सर्वस्य कर्त्ता"** जगत् के सम्पूर्ण कर्म जिसके द्वारा सम्पन्न होते हैं अथवा सम्पूर्ण जगत् में जिसका कर्म है वह सब जगतकर्त्ता विश्वकर्मा है । विश्वकर्मा शब्द के आविष्कारक यद्यपि अनेक विश्वकर्मा सिद्ध हो सकते हैं तथापि सर्वाकार सर्वकर्ता परमपिता परमात्मा ही सर्वप्रथम

विश्वकर्मा है । ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ के मतानुसार **प्रजापतिः प्रजाः सृष्टवा विश्वकर्माऽभवत्** प्रजापित परमेश्वर प्रजा को उत्पन्न करने से सर्वप्रथम विश्वकर्मा है । वेद में परमेश्वर के विश्वकर्त्तव्य का अद्भूत व मनोरम चित्रण विश्वकर्मा नाम लेकर अनेक स्थानों पर किया गया है । सृष्टि का मुख्य निमित्त कारण परमात्मा ही है । वही सब सृष्टि को प्रकृति से बताता है जीवात्मा नहीं है । इस कारण सर्वप्रथम विश्वकर्मा परमेश्वर है । परमेश्वर ने जगत् को बनाने की सामग्री प्रकृति से सृष्टि की रचना की है एतद्विषयक निम्नलिखित मन्त्र द्रष्टव्य है –

किं स्विदासीदाधिष्ठानमारम्भणं
कतमत्स्वित्कथासीत् ।
यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा वि
द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः ॥ ऋ. 10–81–2

अर्थात् जगत् को उत्पन्न करने में कौन सा अधिष्ठान था, इसे आरम्भ करने का कौन सा मूल उपादानकारण जगत् को बनाने की सामग्री थी कि जिससे विश्वकर्मा परमेश्वर ने भूमि और द्यौलेक को अत्यन्त कौशल से उत्पन्न किया । सर्वदृष्टा परमेश्वर ही अपने महान् ज्ञानमय सामर्थ्य से प्रकृति को गति देकर विकसित करके सृष्टि की रचना करता है । उसके विश्वकर्त्तव्य को देखकर बड़े–बड़े विद्वान आश्चर्य करते हैं । महर्षि दयानन्द सरस्वती जी परमेश्वर की सृष्टि रचना का वर्णन सत्यार्थप्रकाश में निम्नलिखित शब्दों में करते हैं – देखो ! शरीर में किस प्रकार की ज्ञान पूर्वक सृष्टि रची है कि विद्वान लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं । भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफरा, पंखा कला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरुप मूल रचना लोग नखादि का स्थापन, आंख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जागृत, स्वप्न, सुषप्ति अवस्था भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला, कौशल स्थापनादि अद्भूत सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है ? इसके बिना नाना प्रकार के रत्न धातु से जड़ित भूमि, विविध प्रकार के वटवृक्ष आदि के बीजों में अतिसूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत कृष्ण चित्र मध्यरुपों से युक्त पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कन्द मूलादि अनेकानेक करोड़ों भूगोल, सूर्य चन्द्रादि लोक निर्माण धारण, भ्रामण, नियमों में रखना । आदि परमेश्वर के बिना कोई नहीं कर सकता । इस प्रकार वेद व सृष्टि की रचना कर अद्भूत सामर्थ्य केवल परमेश्वर का है इसलिए सर्वप्रथम विश्वकर्मा वही है । परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव होने से उसके विश्वकर्मा नाम की भांति सच्चिदानन्द स्वरुप निराकार सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्ता आदि अनन्त नाम हैं । किन्तु उसका मुख्य नाम ओ3म् है उसी का ध्यान रखना चाहिए ।

विश्वकर्मा परमेश्वर ने जगत् में अनेक पदार्थ होते हैं । उन पदार्थों में परमेश्वर ने जितने–जितने दिव्यगुण स्थापित किए हैं उतने–उतने ही दिव्यगुण हैं न उससे अधिक और न न्यून । उन दिव्य गुणों के द्वारा विश्व में अपना–अपना कर्म करने से अग्नि, सूर्य आदि जब पदार्थ ही विश्वकर्मा कहलाते हैं । शतपथ ब्राह्मणग्रन्थ **विश्वकर्मायमग्निः** वाक्य से अग्नि को विश्वकर्मा कहा है । **असौ वै विश्वकर्मा योऽसी सूर्यः तपति** कहकर विश्व को प्रकाशित करने के कर्म से सूर्य को विश्वकर्मा कहा है । वैदिक साहित्य में इसी प्रकार से वायु, पृथिवी व वाणी आदि तीनों लोकों के अनेक दैविक पदार्थ को विश्वकर्मा शब्द से व्यक्त किया गया है । हमें इन पदार्थों के विश्व कर्त्तव्य को जानकर विद्या, विज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए । सृष्टि के आरम्भकाल में मनुष्य के पास नामकरण के कोष के रुप में केवल वेद थे ।

भूत भव्यं भविष्यच्च
सर्वं वेदात् प्रसिध्यति

आह्वान "कब मिलेगी मेरी यात्रा को मंजिल"

- राजपाल सिंह आर्य

आर्यसमाज विश्व का वह पुस्तकालय है जिसमें सभी वर्गों, पंथों, महापुरुषों व आतातातियों का इतिहास सच्चे और प्रामाणिक रुप में संजों कर रखा हुआ है। आज तक आर्यसमाज ने हर मुश्किल वक्त में अपनी बात ऐतिहासिक प्रमाणिक दृष्टि में रखी है। शुद्धि चक्र के सूत्रधार स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी आर्यसमाज के शिखर पुरुष हैं। 23 दिसम्बर 1926 को अब्दुल रसीद नामक मुसलमान ने जब इस महापुरुष को अपनी गोलियों का शिकार बनाया, तब स्वामी जी के अनन्य सेवक धर्मसिंह जी को बीच-बचाव करते हुए गोली जा लगी। फिर भी एक दूसरे साथी धर्मपाल की सहायता से धर्मसिंह ने अब्दुल रसीद को पुलिस आने तक दबोचे रखा और मुख्य गवाह के रुप में गवाही देकर अब्दुल रसीद को फांसी की सजा दिलवाई।

प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा लिखित - **धर्मवीर-धर्मसिंह** नामक पुस्तक पढ़कर और गुरु ब्रह्मानन्द सरस्वती जी द्वारा कही गई बातें व स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती द्वारा धर्मसिंह के बारे में सुनाई गई घटनाओं को सुनकर हमारे मन में भी धर्मसिंह के लिए कुछ करने का विचार आया। 7 मार्च 2009 को जन कल्याण सेवा संस्थान पूण्डरी, कैथल द्वारा शौर्य-सम्मान दिवस मनाकर धर्मसिंह जी को याद किया गया। इस कार्यक्रम में आर्यसमाज की महान हस्तियाँ प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु पंजाब, श्री कन्हैयालाल आर्य गुड़गांव, श्री ज्ञानचंद शास्त्री भिवानी, महाशय जयपाल आर्यसमाज करनाल पहुंची थी। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्यसमाज के विद्वान संन्यासी स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती जी के द्वारा की गई थी। कार्यक्रम में विशेष रुप से आमंत्रित किये गये सेवक धर्मसिंह जी की दो बेटियां माता शकुंतला देवी व माता सुशीलादेवी को संस्थान की तरफ से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम इतना सफल रहा कि कई दिनों तक कार्यक्रम की सफलता के बधाई-सन्देश हमें मिलते रहे। कार्यक्रम की उपलब्धि को देखते हुए हमने धर्मसिंह जी के बारे में आगे और कुछ करने की सोची, लेकिन उससे पहले धर्मसिंह जी का प्रमाणिक पत्र मजबूत करने के लिए उस मुकदमें के कागजों की खोज की, जिसमें अब्दुल रसीद के खिलाफ गवाह के रुप में धर्मसिंह जी ने अपने जीवन की स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ कई बातों का खुलासा किया।

आर्यसमाज के कई स्थानों पर हम जानकारी लेने के लिए पहुंचे, लेकिन हर जगह हमें निराशा ही हाथ लगी। स्वामी श्रद्धानन्द जी से संबंधित मुकदमें के कागजात शायद मुझे पढ़ने को मिल जाये। यह सोचकर मैं पिछले दिनों स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, दिल्ली जा पहुंचा। वहां के संचालक से मिला मैंने उसे स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी की हत्या से संबंधित सभी बातें बताकर ये जानना चाहा कि उस केस के कागजात जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या के दोष में व सेवक धर्मसिंह व उसके साथियों की गवाही पर अब्दुल रसीद को फांसी हुई है, कहां मिलेंगे, पर उस महाशय की बात सुनकर मैं चकित रह गया। वो महाशय मुझे कहने लगे कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का कत्ल तो छुरे के साथ हुआ था। उसकी यह अप्रमाणिक बात सुनकर मुझे अपने व अपने समाज पर बहुत शर्म महसूस हुई। मैंने सोचा देखो मेरे समाज ने एक ऐसे व्यक्ति को उस महापुरुष की बलिदान स्थली पर बिठा दिया है, जिसकी हत्या जैसी घटना के बारे में भी ये व्यक्ति पूरी जानकारी नहीं रखता। महाशय के इस जवाब ने मेरी खोज पर विराम लगा दिया। मैंने सोचा जो लोग सूरज के बारे में नहीं जानते, वे सितारों की क्या पहचान करेंगे ? स्वामी श्रद्धानन्द के बारे में जिसको कुछ मालूम नहीं, जो धर्मसिंह जी के बारे में मुझे क्या जानकारी देगा। जिस स्थान पर इतनी बड़ी घटना को अंजाम दिया गया, उस स्थान पर बैठे आज के लोग उस घटना के

बारे में कुछ नहीं जानते, इससे बड़ा आश्चर्य क्या होगा ? स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या के कागजों को पढ़ने की मुझे आज भी जिज्ञासा है। जहां भी आर्यसमाज में जाता हूँ, उसके बारे में पूछता हूं, लेकिन मुझे तो केवल दो ही जवाब सुनने को मिलते हैं – हमें इस बारे में कुछ नहीं पता, हमारे पास मुकदमें संबंधी कोई कागजात नहीं है।

विश्व के हर इतिहास का केन्द्र बिन्दु आर्यसमाज रही है। समुद्र में समाई हुई हर नदी की तरह आर्यसमाज के पास सबका प्रमाणिक इतिहास है। लेकिन क्या कोई मुझे बताएगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन के ऐतिहासिक पन्ने जो कि उनकी हत्या के बाद कोर्ट-केस के हैं, व जिसमें जालिम को फाँसी हुई, वो इतिहास किसके पास मिलेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या के मुकदमें में दिल्ली में आर्य समाज की तरफ से वकील कौन थे, व वकील की वह फाईल कहाँ है, जिसके सहारे वकील मुकदमा लड़ा था? अदालत का वह ऐतिहासिक फैसला किसके पास है, जिसमें आर्यसमाज की विजय हुई थी? वो कौन-कौन से वीर थे जिन्होंने मुल्लाओं की धमकियों की परवाह न करते हुए जालिम रसीद के खिलाफ गवाही दी थी।

क्या मेरे इन प्रश्नों का जवाब है किसी के पास, अगर है तो मुझे ये जानकारियां उपलब्ध करवाए और एक पूरा समाज इस महानुभाव के ताउम्र ऋणी रहेगें अगर इस बारे में मुझे कोई जानकारी प्राप्त न हुई तो समझूंगा कि सबकी जानकारी रखने वाले मेरे आर्यसमाज के साथ दीपक के तले अन्धेरे वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

पता : गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम वाणी, पूण्डरी कैथल (हरियाणा)

महान् लोगों से शिक्षा लें

इतिहास में कुछ लोग ऐसे हुए हैं, जो अपनी कड़ी मेहनत तथा लगन के बल पर सफलता के शिखर तक पहुंचे हैं। ऐसे लोगों के जीवन से हमे अवश्य सबक सीखना चाहिए। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के बारे में भला कौन नहीं जानता। इनका जन्म इतने गरीब परिवार में हुआ कि रोटी के भी टोटे पड़ जाते थे। मेहनत-मजदूरी करके उन्होंने कुछ पुरानी किताबें खरीदी। कभी घर में आग की रोशनी में तथा कभी शहर की गलियों में लगे बल्बों के नीचे बैठकर इन्होंने पढ़ाई की। कोयले से पेन तथा पेंसिल का काम लिया। कड़ी मेहनत करके ज्ञान अर्जित किया। लिंकन जंगलों में जाकर पेड़-पौधों के सामने तथा कभी गांव वाले लोगों को इक्ट्ठा करके भाषण का अभ्यास करते थे। उनका यह अभ्यास तथा कड़ी मेहनत एक दिन रंग लाई और वह अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए। मैं यहां आपको यह बताना चाहता हूं कि मेहनत करके रोटी कमाने वाला तथा फटी-पुरानी किताबों से ज्ञान प्राप्त करके यदि व्यक्ति राष्ट्रपति बन सकता है, तो बड़ी आसानी से आप एक सफल एवं प्रभावशाली वक्ता भी बन सकते हैं, क्योंकि आपके पास तो बहुत सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। जरुरत है तो बस इस दृढ़ निश्चय, कठिन परिश्रम तथा सच्ची लगन की। अधिकांश लोग केवल इसलिए असफल रहते हैं, क्योंकि उनको कोई उचित मार्गदर्शन करने वाला नहीं मिलता।

हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी कब बन सकेंगे ?

मन्थनात्मक

- कन्हैयालाल आर्य, हरियाणा

हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्हें गुरु के रुप में महर्षि दयानन्द जैसा तपस्वी ऋषि मिला। वह एक ऐसा मार्गदर्शक था, जिसके सम्मुख सभी गुरु ऐसे विलुप्त होते चले गये जैसे सूर्य उदय होने पर चांद एवं नक्षत्रों की ज्योति धूमिल हो जाती है। उन्होंने अपने अपार ज्ञान एवं तपस्या के बल पर वेद रुप वाणी हमें प्रदान की, जिसे पूरा मानव जगत पढ़ सकता है, पढ़ा सकता है। **स्त्री शूद्रौ ना धीयाताम्** स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं वाली वार्ता को परिवर्तित करते हुए यह सिद्ध कर दिखाया कि वेद पढ़ना, पढ़ाना, और सुनना, सुनाना सब आर्यों का न केवल धर्म अपितु परम धर्म बताया।

आर्यसमाज ने न जाने कितने ही अनुसूचितों एवं जनजाति युवकों को वेद ज्ञान देकर पंडित बनने का गौरव प्रदान किया। आज जगह जगह वेदों, मन्त्रों के गान से यज्ञाग्नि प्रज्वलित हो रही है। महर्षि दयानन्द के महान आन्दोलन ने आज पौराणिक जगत में खलबली मचा दी है। आज उन हरिजनों को मन्दिरों में जाने का अधिकार दिलाया, उन्हें यज्ञोपवीत पहनाये और वेद पढ़ने का अधिकार दिया। महर्षि दयानन्द समाज के इस उपेक्षित वर्ग के मसीहा बन कर आये। संसार का एक भी सुधारक ऐसा नहीं जिसने समाज को ऊंचा उठाने के लिए विष के प्याले पिये हगो, पत्थर खायें हो, अपमान के कड़वे घूंट पियें हों और फिर भी मानव जाति को अमृत पिलाया हो। फिर भी यदि आज मानव जाति उनके उपकार को नहीं मानती तो यह उसकी कृतघ्नता होगी।

महर्षि दयानन्द के सम्पवर्क में जो भी आया वह कृतकृत्य हो गया। चाहे वह श्रद्धानन्द हो या लेखराम, गुरुदत्त हो या हंसराज। सभी सोने के रुप में दयानन्द के सम्पर्क में आते गये और कुन्दन बन कर निकलते गये। परन्तु आज हम उनके उत्तराधिकारी क्या उस ओर बढ़ रहे हैं ? यदि नहीं तो क्यों ? आर्यों ! सोचो, विचारों, अपनी अन्तरात्मा में झांको। मैं भी झांकू, तुम भी झांको हम सभी झांके, तभी तो हम ऋषि के ऋण से उऋण हो सकेंगे। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि हम दूसरों के दोषों से हम यह निर्णय ले कि दूसरों के दोष देखने की बजाय अपने दोष देखने प्रारम्भ करेंगे।

आज धर्म घट रहा है। पाप और पाखण्ड बढ़ रहा है। आज कथा, प्रवचन, सत्संग मात्र धार्मिक मनोरंजन बन कर रह गये हैं। परन्तु कभी आपने सोचा कि इन सब आडम्बरों से क्या आपको शान्ति मिलने वाली है। हम भीड़ जुटाने में लगे हैं तथाकथित गुरु अपने नाम के बड़े बड़े बैनर, चित्र इत्यादि लगवा कर अपनी प्रसिद्धि करा रहा है। उसे धर्म, कर्म से कोई वास्ता नहीं। बड़े-बड़े मंच सजाये जा रहे हैं। परन्तु सोचो ! इनका जरा भी स्थायी प्रभाव जनता पर पड़ रहा है। एक भीड़ जो विवेक शून्य एवं ज्ञान शून्य है, उसे तथाकथित गुरु ताली बजवा कर सिर हिलवा कर, कथा के बीच खड़े होकर ठुमके लगवाकर तो असभ्यता का परिचय देकर, धर्म का प्रचार का नाम दिया जाता है क्या यही धर्म है? क्या इसे सत्संग कहोगे ? जिस प्रकार फिल्मी नायक लोगों को विभिन्न मुद्राओं को दिखाकर मूर्ख बनाता है। उसी प्रकार आज कल यह तथाकथित धर्म गुरु लोगों को मूर्ख बना रहे हैं। परन्तु मैं इन्हें दोषी नहीं ठहराता। वह तो व्यापारी है व्यापार करना है, परन्तु महर्षि दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यों ! सोचों, क्या यह आडम्बर एवं ढोंग हमारी अकर्मण्यता के कारण

नहीं हो रहा है, जबसे हमने आर्यसमाज के प्रचार, प्रसार करने की बजाय फोटो खिचवाना, नेताओं के स्वागत करना और कुछ भजन सन्ध्या करा देना ही आर्यसमाज के उत्सव का उद्देश्य बना लिया है। तभी यह सब कुछ हो रहा है। वैदिक प्रचार एवं प्रसार लुप्त हो रहा है। तभी तो आज तथाकथित धर्म गुरु कूड़ा करकट बेच रहे हैं। क्योंकि वह दुकान अपनी ऊंची लगाकर अपना कूड़ा करकट बहुत महंगे दामों पर बेच रहे हैं और हम बढ़िया दुकानदार होते हुए, अच्छा माल रखते हुए भी अपने वेद रुप माल को लोगों के गले नहीं उतार रहे हैं। आइये, आज हम इस विषय पर सोचें।

आज दुखद पीड़ा यह है कि आज के आर्यसमाजी वेद प्रचार के कार्य को प्रमुखता की बजाय विद्यालयों, औषधालयों, दुकानों, मैरिज ब्यूरो आदि चलाने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। यह कार्य तो कोई भी संस्था कर सकती है, परन्तु वेद प्रचार का कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। अतः आर्यसमाजी बन्धुओं ! यदि हम वास्तव में महर्षि दयानन्द के उपकारों को मानते हैं उनके ऋण से उऋण होना चाहते हैं तो इन दूसरे कामों को प्रभुखता देने की बजाय वेद प्रचार को प्रमुखता दें, तभी हम महर्षि स्वामी दयानन्द को वेदां वाला कहने के अधिकारी हो सकेंगे। मैं ऐसा मानता हूँ कि विश्व में आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो उच्च स्वर से कहता है कि वेद की ज्योति जलती रहे। फिर यह कैसी जलेगी ? इन विद्यालयों, औषधालयों, बरातघरों के चलाने से नहीं, बल्कि वैदिक मान्यताओं के प्रचार-प्रसार से जलती रहेगी।

अतः आर्यो उठो ! जागों, और आज से एक प्रण लो कि आज हम विवादों, झगड़ों, कुर्सियों के लोभ को तिलांजलि देकर महर्षि दयानन्द के स्वप्न वेद के प्रचार और प्रसार में अपनी पूरी शक्ति जुटा देंगे। यदि हम ऐसा कर सके तो हम महर्षि दयानन्द की जय बुलाने के सच्चे अधिकारी बन सकेंगे।

पता-4/45, शिवाजीनगर, गुड़गांव, हरियाणा

माँ मुझे लो आँचल में

माँ, ओ माँ,
लो मुझे आँचल में
मत मारो मुझे, अपने गर्भ में
कुल का दीया, भले ही मैं न हूँ
पोते की ज्योति, मैं जीऊँगी जब तक
दोनों ही कुटुम्ब का, करूंगी मैं उद्धार
होऊंगी नहीं मैं, कभी भी गद्दार
मम्मी-पापा मुझे भी, यह संसार देखने दो
दादा जी-दादी जी, मुझे जीने दो
घर की मैं हूँ पोती, घर की मैं हूँ ज्योति
संस्कृति संस्कार की, निभाऊंगी मैं सब
ग्रन्थों की सुरक्षा के लिए, फिर भी जन्म दो
मम्मी-पापा मुझे, यह संसार देखने दो।

डॉ. सुभाष नारायण भालोराव "गोविन्द"
अवन्तिका, ए-28, न्यू नेहरु नगर कालोनी,
ठाठीपुर, मुरार, ग्वालियर-474011

वैचारिक

"प्रजापते: प्रजा अभूम"

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

यजुर्वेद के इस वाक्य को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास के अन्त में वर्णन किया है- "परमात्मा हमारा राजा हम सबके किंकर भृत्यवत् हैं। वह कृपा करके अपनी सृष्टि में हम को राज्याधिकारी करे और हमारे हाथ से अपने सत्य न्याय की प्रवृत्ति करावे।"

महर्षि दयानन्द का षष्ठ समुल्लास को लिखने का यही अभिप्राय रहा कि परमात्मा के बताए ज्ञान के अनुसार आचरण करने वाले इस सृष्टि में राजा व अधिकारी हों तथा सभी कार्यों को सत्य व न्यायानुसार पालन करावें व करें। समुल्लास में राजा कैसा होना चाहिए सभा कैसी हो कितनी हों राजा का प्रजा पर व प्रजा का राजा पर अंकुश होना चाहिए सामाजिक नियम पालने में सभी परतन्त्र हों। राजार्य सभा, धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा कैसी हो। प्रजा से कर लेने का विधान, शत्रु सले युद्ध करने के लिए क्या करें, दण्डनीय को दन्ड कैसे देवें तथा साक्षी कैसा होना चाहिए। इन विषयों का विस्तृत वर्णन चाणक्य नीति, मनुस्मृति, शुक्र नीति, महाभारत, वेद आदि शास्त्रों में मिलता है।

महाभारत युद्ध में कुछ पूर्व से हम वेद ज्ञान से दूर हो गए राम राज्य में जहां वैदिक धर्म की कीर्ति पृथ्वी पर फैली हुई थी भाई भाई के लिए अपने प्राणोत्सर्ग करने की तत्पर रहता था पिता की आज्ञा का उल्लंघन किसी भी परिस्थिति में करना कठिन था राजा भी तप भोजन करता था जब देख लेता था कि राज्य में कोई भूखा-प्यासा तो नहीं है, किसी को कोई कष्ट तो नहीं है, प्रत्येक परिवार, ग्राम, नगर का ध्यान रखा जाता था और ऐसे वेद के विद्वान राजा की प्रजा पूजा किया करती थी। आज उस सबका उल्टा हो गया है। महात्मा गांधी ने भी महर्षि दयानन्द सरस्वती की इसी बात का समर्थन कर रामराज्य की स्थापना के लिए बल दिया था। स्वराजा के विषय में भारतीयों को बताया अनेक विशाल ह्रदय राजनेताओं ने स्वराज्य व रामराज्य के लिए प्रयत्न किए सरदार वल्लभभाई पटेल, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, पं, प्रकाशवीर शास्त्री, लाला लाजपतराय जैसे अनेक महापुरुष हुए हैं। यह वह महान आत्माओं थीं जिन्होंने इस विषय को समझा और इस हेतु प्रकाश भी किया प्रयत्न भी किया, परन्तु इन महान आत्मों के पश्चात् राष्ट्र इन विषयों को भूल गया न स्वराज्य का शब्द और न ही रामराज्य का घोष आज संसद में गूंजता है। सरकारें आती है और चली जाती है। प्रत्येक नई सरकार पुरानी सरकार की कमियां निकालने में लगी रहती है, किसी के मुखारविन्द से कोई शब्द अपशब्द भूलवश निकल भी गया हो, तो उसी पर चर्चाऐं व बहस चलती रहती है। किसी ने घोटाला कर दिया कोई भ्रष्टाचार हो गया हो तो पूरा राजतन्त्र उसकी ही चर्चा करते करते पूरा कार्यकाल यूँ ही समाप्त कर देता है चर्चा होनी चाहिए परन्तु भ्रष्टाचारी को ऐसा दण्ड भी तो मिलना चाहिए जिससे भविष्य में कोई राजद्रोह न करे राजतंत्र लोकतन्त्र राष्ट्र व समाज के साथ गद्दारी, विश्वासघात न करे। सत्य व न्याय आज देखने को नहीं मिलता अभी तक विदेशों में जमा कालाधन किस किस का है नाम ही नहीं खोले गए वह कौन लोग है जिन्होंने देश का पसीने से कमाया अथाह धन विदेशों में जमा कर रखा है। ऐसे अनेक घोटाले हैं उनका कुछ नहीं बिगड़ा यदि कारागार में भी गए तो वहां उन्हें वातानुकूलित स्थान, बात करके के साधन, अच्छा भोजन जो उन्हें चाहिए मिला यह कैसा दण्ड है? एक गरीब भूख मिटाने को रोटी चूरा ले तो उसे कोड़ो से मार-मार कर लहूलुहान कर दिया जाय और करोड़ों अरबों के चोर खुल्लम खुल्ला मौज ले रहे हैं।

हम दयानन्द, श्रद्धानन्द के भारत की जगह आज रावण, कंस, दुर्योधन का भारत बनाते जा रहे हैं, जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है। भ्रष्टाचार ऊपर से चलता है नीचे से नहीं। जहां रामराज्य में भाई-भाई के लिए राज्य को ठोकर मारता था महाभारत काल में राज्य के लिए युद्ध को तैयार रहता है और यह कहता है पांच ग्राम तो क्या एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूंगा। आज भाई-भाई का शत्रु, पत्नी-पति में विरोध, पिता-पुत्र में भेद, मित्र-मित्र का विश्वासघाती हो रहा है, दिन रात हत्या, कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, बलात्कार, व्याभिचार हो रहे हैं। कोई पूछने वाला ही नहीं, रक्षा तंत्र की नाक के नीचे ही जघन्य अपराध हो जाते हैं और यहां तक कि रक्षक ही ऐसे काण्डों में संलिप्त मिल जाते हैं तथा सामान्य की रक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसीलिए छठे समल्लास का प्रकाश किया कि **हमारा राजतन्त्र सुदृढ़ हो न्याय मार्ग पर चले सत्याचरण का पालन करें**, परन्तु ऐसा स्वतन्त्रता के इतने दिनों बाद अभी तक नहीं हुआ जो कि बड़े दुःख का विषय है।

हमें ऐसा राज्य तभी मिल सकता है जब हम गुरुकुल आश्रम में वैदिक पठन-पाठन की ओर ध्यान देंगे और आर्यसमाज के तीसरे नियम के अनुसार वेद पढ़ने-पढ़ाने तथा सुनना-सुनाना इस पर ध्यान दें तथा राजार्य सभा का निर्माण कर आर्यों को राजनीति में पहुंचाये। समाज में जाति, वर्ग, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब जैसा भेद हटावें, तथा जो भी अन्धविश्वास व पाखण्ड व्याप्त है उन्हें दूर करें इसके लिए आर्यों को कमर कस कर मैदान में संघर्ष करने हेतु आना होगा। महाराज मनु के अनुसार हमें ऐसा राजा चाहिए -

यस्य स्तेनः पूरे नास्ति नान्यस्त्रीगो न दुष्ट वाक्।
न साहसिक दण्डध्नौ स राजा शक्र लोक भाक्॥

अर्थात् जिस राजा के राज में न चोर, परस्त्रीगासी, न दुष्ट वचन को बोलने वाला, न साहसिक डाकू और दण्डधन अर्थात् राजा की आज्ञा को भंग करने वाला हो वह राजा अतीव श्रेष्ठ है। महर्षि दयानन्द की विचारधारा व उद्देश्य सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की थी इसलिए उन्होंने वेद प्रचार पर बल दिया। आर्यसमाजों की स्थापना की। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुप्रथाओं को दूर करने को संघर्ष किए। गुरुकुलों की स्थापना की। वैदिक पाठशालाएँ स्थापित की। क्षत्रियों, ब्राह्मणों आदि के कर्त्तव्यों का पालन किया। राजा महाराजाओं से मिले, उनके हृदयों में वेद ज्ञान की ज्योति जागृत की, वह मानते थे कि क्षत्रियों को बलवान होना चाहिए। राजा ज्ञानवान हो। सत्य व न्याय पर चलने वाले हों, वेद पढ़े हों, क्योंकि जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा भी होगी।

आर्यों का निर्माण करने हेतु वेद ज्ञान का प्रचार किया गुरुकुल वैदिक विद्यालय, आश्रम बने जहां से वैदिक ज्ञान का जन-जन में संचार हो। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ब्रह्मचर्याश्रम पर अधिक बल दिया और कहा कि ब्रह्मचर्य के यथावत् सेवन करने हेतु कहा। जिससे समाज में सब ओर वेद वेदांग के जानने वाले हों जब पुरुष बलवान व आत्मज्ञान युक्त होंगे तो राज्य पालन की व्यवस्था भी उत्तम होगी। विद्यावानों का राज्य में प्रवेश होगा और पूर्ण राजनीति के पंडित होकर सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की स्थापना की जाएगी। यजुर्वेद की उक्ति - **"प्रजापतेः प्रजा अभूम"** भी चरितार्थ होगी। चक्रवर्ती राज्य का उद्देश्य किसी लोभ हेतु नहीं अपितु संसार को श्रेष्ठ बनाने तथा सत्य व न्याय का पालन करने कराने हेतु है परमात्मा हमारा राजा है। अतः श्रेष्ठ व्यक्तियों को इस सृष्टि में राजपालनार्थ राज्याधिकारी हेतु आना चाहिए।

इसलिए हमें संकल्प लेना चाहिए कि आर्यसमाजों में महर्षि दयानन्द के कार्य को हवन तक सीमित न रखें राष्ट्र की गतिविधियों में भी आगे आएं, जिससे राजनीति तथा समाज शुद्ध व पवित्र सत्य व न्याययुक हो।

पता - चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

पुण्य स्मरण हमारे आदर्श - गुरु विरजानन्द सरस्वती

- डॉ. अशोक आर्य

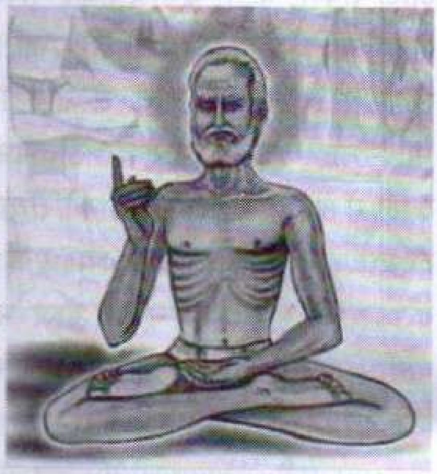

महर्षि दयानन्द सरस्वती को महर्षि बनाने वाले, इतिहास में स्वर्णाक्षरों में स्थान पाने वाले दण्डी गुरु विरजानन्द जी जन्म 1835 वि. तद्नुसार 1778 ई. को पंजाब के करतारपुर के समीप गंगापुर गांव के सारस्वत ब्राह्मण पं. नारायणदत्त जी के यहां हुआ। पंचवर्षीय अवस्था में चेचक के कारण आंखों की ज्योति जाती रही। पिता ने घर पर ही संस्कृत की शिक्षा दी, किन्तु छोटी आयु में ही माता-पिता ने साथ छोड़ दिया भाई व भावज के व्यवहार से तंग आकर गृह त्याग कर ऋषिकेश व फिर कनखल चले गए। यहां स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास दीक्षा लेकर विरजानन्द नाम पाया।

कुछ समय कनखल निवास के पश्चात काशी चले गए, जहां विद्याधर जी से उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की। यहां वे गया जाकर अध्ययन व अध्यापन किया। वहां से क्रमशः कलकत्ता, सोरों, गड़ियाघाट गए। यहां एक दिन मन्त्रपाठ करते स्वामी जी को अलवर नरेश ने देखा तो वह उन्हें इस शर्त पर अलवर ले गए कि वह स्वामी जी से प्रतिदिन शिक्षा लेंगे तथा जिस दिन नहीं आवेंगे, उस दिन अलवर छोड़ देंगे। शीघ्र संस्कृत सिखाने के लिए स्वामी जी शब्द बोध पुस्तक की रचना की। एक दिन राग रंग में मस्त अलवर नरेश गुरु जी के पास जाना भूल गया, बस स्वामी जी ने उसी दिन अलवर से प्रस्थान कर पुनः सोरों के गड़ियाघाट जा विराजे। यहां स्वामी जी को भयंकर रोग ने आ घेरा। स्वामी जी के शिष्य उन्हें अपनी सेवा के बल पर मौत के मुंह से वापिस लाये। अब स्वामी जी यहां से मुरसान, भरतपुर होते हुए मथुरा पहुंचे। यहां स्वामी जी ने पाठशाला खोली तथा नियमित शिक्षा दान करने लगे। पढाने की उत्तम शैली के कारण शिक्षा के केन्द्र काशी से भी शिक्षार्थी स्वामी जी के पास आने लगे। स्वामी जी देश को स्वाधीन करा पुनः विश्व गुरु में देखना चाहते थे। वह जानते थे कि राजा के सुधार से लोग स्वयं ही सुधर जावेंगे। यही कारण है कि आपने राजाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। मथुरा में शास्त्रार्थ की चुनौती मिली, जिसे स्वीकार किया किन्तु यह शास्त्रार्थ कुटिलता की भेंट चढ़ गया। स्वामी जी अष्टाध्यायी और महाभाष्य नामक आर्ष ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थो को धूर्तों की कृति मानते थे। अतः स्वामी जी आर्ष ग्रन्थों के प्रचार व प्रसार में जुट गये। सन् 1857 के भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के आप जनक थे। इसमें भाग लेने वाले सभी राजा आपके शिष्य थे। यह योजना आपने अपने गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी के आदेश से बनाई। इस योजना पर सभी शिष्य शासको ने अमल किया। स्वामी जी एक सर्वधर्म सभा के माध्यम से भारत को एक संगठन में बांधना चाहते थे किन्तु जयपुर के राजा रामसिंह के इसमें रुचि न लेने से ऐसा सम्भव नहीं हो सका। स्वामी जी की शिक्षा की प्रसिद्धि चतुर्दिक फैल रही थी, किन्तु स्वामी जी भारत के उद्धार के लिए आर्ष ग्रन्थों के प्रसारार्थ शिष्य खोज रहे थे, इन्हीं दिनों प्रभु आदेश से स्वामी दयानन्द सरस्वती आपको शिष्य स्वरुप मिले। 1917 वि. तदनुसार 1860 ई. को महर्षि दयानन्द ने गुरु जी की इच्छानुरुप आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया। गुरुजी ने स्वामी दयानन्द को अपने सम विद्वान् बनाया तथा वैदिक प्रचार व स्वाधीनता आदि का बोझ अपने कन्धों से उतार दयानन्द के कन्धों पर दे डाला। इस प्रकार गुरु विरजानन्द को इस बात की खुशी थी कि जैसे शिष्य की आवश्यकता थी वह उनको अपने जीवन के अंतिम क्षणों में मिल गया। सम्वत् 1925 वि. आश्विन की बदी त्रयोदशी सोमवार तदनुसार सितम्बर 1858 ई. को निश्चित ही इस संसार से विदा हुए। उनके देहावसान का समाचार सुन महर्षि दयानन्द सरस्वती के मुख से निकला आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है। आपका जीवन आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार को समर्पित था। जब तक सृष्टि रहेगी आपका नाम सूर्य के समान चमकता रहेगा।

पता : 116, मित्र विहार, मण्डी डबवाली हरियाणा

"आत्म निवेदनम्"

आर्यों ! जरा तो सोचो......

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महाभारत पर्यन्त समस्त भूमण्डल पर आर्यों का एक क्षत्र सार्वभौमिक चक्रवर्ती साम्राज्य रहा, कालान्तर में आर्यों के अभाग्योदय, आलस्य, प्रमाद और परस्पर की फूट के कारण विश्व में तो क्या भारत में भी आर्यों का अक्षुण्ण राज्य नहीं रहा, यहां तक कि यह विश्व गुरु कहा जाने वाला देश भारत परतन्त्र हो गया। सदियों से पराधीनता से संतप्त देशवासियों को विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिये युग प्रवर्तक महर्षि प्रवर देव दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सर्वप्रथम स्वतन्त्रता की नींव सन् 1857 में डाली और देशवासियों का सोया हुआ स्वाभिमान जगाया। भारत देश की आजादी में संघर्षरत नरमदल व गरमदल दोनों ही महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरित थे। यही कारण था कि कांग्रेस इतिहास के लेखक पट्टाभि सीतारमैया को लिखना पड़ा कि **देश की आजादी के आन्दोलन में सर्वाधिक योगदान आर्यसमाजियों का रहा है। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की सूची में सर्वाधिक संख्या भी आर्यों की है।** किन्तु कुछ भूलों के कारण आज आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती वर्तमान राजनीति में उपेक्षित है कुछ आर्य नेता राजनीति में हैं भी पर वे परमुखापेक्षी बन विभिन्न दलों के दल–दल (कीचड़) में फंसे हुए हैं, उनका अपना कोई भी स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। बेचारे असहाय हुए कुछ भी कह पाने में असमर्थ, दलगत राजनीति में घुटन महसूस कर रहे हैं।

अस्तु ! आर्यजनों ! अपनी शक्ति व स्वरुप को पहचानों। भारत सरकार के पश्चात शिक्षा जगत में यदि किसी का सर्वोपरि स्थान है तो केवल–केवल आर्यसमाज का है, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय तथा अनेकों अन्य गुरुकुल संस्थान, डी.ए.वी. कालेज केवल भारत में ही नहीं विदेशों में भी शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने में संलग्न हैं। आर्य विद्वान् वक्ता–प्रवक्ता भी अद्वितीय है यानि इस प्रकार से आर्यसमाज सबल है पुनरपि आर्यों की उदासीनता ही आज भारत देश की दुर्दशा की उत्तरदायी है। क्योंकि अच्छे लोगों द्वारा वर्ती गई उपेक्षा ही समाज में फैले प्रदूषण का कारण कहलाती है तथा उदासीन लोग ही सर्वाधिक दोषी कहलाते हैं। क्या आर्यों ने कोउ हो नृप हमें हानि का पाठ पढा रखा है ?

जरा सोचो ! आज भारत राष्ट्र की अस्मिता खतरे में हैं, सम्प्रति स्थिति यह है कि किसी जंगल क्षत–विक्षत अवस्था में पड़ा एक वृषभ अंतिम सांसे ले रहा था, इतने ही में एक कुत्तों का दल वहां आया और वृषभ के घावों को नोच–नोच कर खाने लगा। तभी एक दूसरा श्वान समूह आकर गुर्राने लगा और कालान्तर में उन सभी कुत्तों को बल पूर्वक हटाकर उस बैल को स्वयं खाने लगा। इस प्रकार बारी–बारी से उस बैल को खण्ड–खण्ड कर दिया। यह एक दृष्टान्त है। इसका अभिप्राय यह है कि वृषभ–राष्ट्र को कहते हैं आज भारत रुपी (वृषभ) राष्ट्र की दशा भी ठीक यही है कि प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में धन, बल, बाहुबल और छल–बल आदि का सहारा लेकर बदल–बदल कर ये श्वानवत् तथा कथित राजनैतिक लोग देश को लूट–लूट कर खा ही नहीं प्रत्युत यहां की विपुल सम्पत्ति को विदेशी बैंकों में भर रहे हैं तथा अखण्ड भारत को खण्डित करने में लगे हैं। यही कारण है कि देश का पढ़ा लिखा नवयुवक बेरोजगारी, भूखमरी, निराशा भरा जीवन व्यतीत करता हुआ दिशा व दिशाहीनता का परिचायक बना हुआ है और भ्रष्टाचार, अनाचार, रिश्वतखोरी, मिलावट का जहर निरन्तर महंगाई की मार आदि की विभीषिकाओं को विवश होकर झेल रहा है। ऐसी दुरवस्था से देश को मुक्त कराने का कार्य केवल एक सच्चा ईश्वर पुत्र आर्य ही कर सकता है। सभी आर्यों का विश्व कल्याण हेतु एकमेव लक्ष्य होना चाहिए।

आशा और विश्वास के साथ आपका ही विनम्र सेवक – आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री

आयुर्वेदामृत कैसा पानी, किस प्रकार पिएँ ?

(गतांक से)

- आचार्य डॉ. वेदव्रत आर्य
सेवानिवृत्त-आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी

भौम जल – आन्तरिक्ष जल में मधुरादि छः रसों में से कोई भी रस नहीं होता, होता भी है तो बहुत अल्प मात्रा में न के समान अव्यक्तरुप में ही होतै है । अमृत सदृश, जीवनदायक, तृप्तिकारक, शरीर को धारण करने वाला, चेतना उत्पन्न करने वाला, थकावट, प्यास, मद (उन्माद, पागलपन), मूर्च्छा, तन्द्रा, निद्रा और दाह को शान्त करने वाला होता है । और अधिक क्या कहूँ? इसके लिए आचार्य सुश्रुत ने तो "एकान्ततः पथ्यतमञ्च" तक कह दिया है । परन्तु यही जल आकाश से गिरकर पृथ्वी पर आ जाता है तो विभिन्न स्थानों की प्रकृति अनुसार मधुरादि छः रसों में से किसी रस को अपने में धारण कर लेता है तब इसे भौम रस कहते हैं। यह जल नदी, नद, सरोवर, तालाब, बावड़ी, कूप, चुण्टी (बिना बान्धा हुआ कुआं), झरपना, उद्भिद (पृथ्वी को फोड़कर निकला हुआ जल), बालू (रेती) के गड्ढे, खेत में बांधकर रोका हुआ, आनूप देश (पत्तों से आच्छादित स्थान) के छोटे-छोटे तालाब आदि स्थानों में होता है । इस प्रकार जल की संश्रय स्थान भिन्नता से जलों के गुण में भी भिन्नता होती है । जैसा कि सुश्रुत में कहा है – पृथ्वी महाभूत के गुण के प्रचुरता वाले स्थान का जल अम्ल या लवण रस, जल, महाभूत की प्रचुरता में कशाय रस और आकाश महाभूत की प्रचुरता वाले स्थान का जल अव्यक्त रस वाला होता है। इसी अव्यक्त रस वाले जल को आन्तरिक्ष जल के अभाव में सेवन करना चाहिए या औद्भिद अर्थात (ट्यूबवेल) का जल सेवन करना उत्तम है ।

इसी प्रकार आगे आचार्य सुश्रुत कहते हैं – शरद ऋतु में सभी प्रकार का जल सेवन किया जा सकता है, हेमन्त ऋतु में सरोवर या तालाब का, वसन्त और ग्रीष्म ऋतु में कुँए या झरने का, प्रावृट ऋतु में चुण्टी (बिना बांधे कुएं का और वर्षा ऋतु में अप्रदूषित कोई भी जल पी सकते हैं ।

नदी के जल का गुण बताते हुए सुश्रुत, चरक और वाग्भट्ट तीनों कहते हैं – पश्चिम की ओर प्रवाहित होने वाली नदियों का जल मधुर और लघु (हल्का) होने से पथ्य, पूर्व की ओर प्रवाहमान नदियों का गुरु (भारी) होने से अपथ्य, दक्षिण की ओर प्रवाहमान नदियों का साधारण होने से साधारण और पीने योग्य होता है, दोषकारक नहीं होता, इसी प्रकार अन्यान्य स्थानों से निकलने वाली नदियों के जल स्थिर अवस्था में विभिन्न प्रकार के रोगों के उत्पादक होते हैं । संक्षेप में – **"नद्यः शीघ्रवहाः लघ्व्यःप्रोक्ता याश्चामलोदकाः । गुर्व्यः शैवालसंच्छन्नाः कलुषा मंदगाश्च याः हिताः ॥"** (सुश्रुत) तेज बहाव वाली नदियों के जल निर्मल और लघु होता है तथा शैवाल, काई आदि से परिपूर्ण और धीमे प्रवाह वाली नदियों के जल भारी होते हैं । मरुस्थल की नदियों के जल प्रायः तिक्त, लवण और मधुर रस वाले, लघु तथा बलवृद्धि में हितकर होते हैं ।

जल की शुद्धि कैसे करें ?

"तप्तायःपिण्डसिकतालोष्ट्राणां वा निर्मापणं प्रसादनञ्च कर्त्तव्यम्" (सुश्रुत) प्रदूषित जल को अच्छी तरह उबालकर, सूर्य की धूप में तपाकर या लोहे को आग में तपाकर लाल करके जलपात्र में डालकर (बुझाकर) शुद्ध कर लेना चाहिए । नदीं, तालाब आदि के जलों की शुद्धि सूर्य की धूप की गर्मी से हो जाती है तथापि उक्त प्रकार से शुद्ध कर लेना उचित हैं ।

प्रदूषित जल को शुद्ध करने की अन्य विधियां भी बतायी गयी है, निर्मली फल, गोमेद मणि, कमलनाल, शैवालमणि, मुक्तामणि और फिटकरी इनमें से किसी भी वस्तु को जल के पात्र में डालकर या स्वच्छ वस्त्र से छानकर शुद्ध करना चाहिए ।

पता : वेदमंदिर सोंठी, सक्ती जि. सक्ती (छ.ग.)

हास्यम्

00000

रामायण पर प्रवचन चल रहा था। स्वामी जी ने पूछा–बताइये कि अयोध्या में इतने सुख सुविधाओं के बावजूद सीता मैया राम लखन के साथ कष्टपूर्ण जीवन जीने के लिए जंगल में क्यों चली गई ?

एक महिला ने जवाब दिया – क्योंकि सीता जी चालाक थीं, वे तीन–तीन सास के साथ रहकर मुसीबत मोल लेना नहीं चाहती थी।

00000

स्कूल में गणित और इतिहास के शिक्षक के साथ कहा–सुनी हो जाती है। इतिहास के शिक्षक चिल्लाकर बोलते हैं – मैं अकबर की सेना बुलवाकर तुम्हारी घेराबंदी कर तुम्हें कालकोठरी में डलवा दूंगा।

इस पर गणित के शिक्षक बोलते हैं – अकबर की सेना को बुलवा कर तो देखो। मैं पूरी सेना को कोष्टक में डालकर शून्य से गुणा कर दूंगा।

00000

तीन बच्चे अपने–अपने दादा जी के भुलक्कड़पन की महिमा बखान कर रहे थे। पहला बच्चा – मेरे दादा जी न, इतने बड़े भुलक्कड़ हैं कि रोज मुझसे पूछते हैं कि तुम किस कक्षा में पढ़ते हो ?

दूसरा बच्चा – मेरे दादा जी तो चश्मा पहन कर दिन भर अपना चश्मा खोजते रहते हैं।

तीसरा बच्चा – ये तो कुछ भी नहीं है। मालूम है ! मेरे दादाजी एक बार रात में बाहर से लौटे तो अपनी छड़ी को बिस्तर में सुला दिया और खुद दरबाजे के कोने में सुबह तक खड़े रहे।

00000

सरोज कुमार विशाल, कोटा, रायपुर (छ.ग.)

"अब तो आओ प्रभु"

अब तो आओ प्रभु
जीवन बीत चला, जगत से रीत चुका,
पंडे–पुजारी, ज्योतिषी, भविष्यवक्ताओं
जीवन के भय और आवश्यकताओं में
कहां–कहां नहीं भटका, ये पहनों वो जपो
करते रहे जीवन भर, बांधते रहे मुट्ठी भर
अब तो आओ प्रभु
पुकारता तुम्हें अदना सा दास।
डर, भय ने कितना भटकाया
जीवन ने क्या–क्या न करवाया
अब न तन का साथ, न मन का साथ
बढ़ती उम्र और मृत्यु नाच
दयालु रख लो अब तो लाज
देता है एक संसारी आवाज
प्रभु तुम्हें पुकारता,
पुकारता एक तुच्छ सा दास।
विषयो ने जीवन भर नचाया
पापी जरुरतों ने कभी न स्मरण कराया
किन्तु जीवन की अंतिम सीमा में
पुकारता हूं स्वर धीमा में
सोचकर कि मैं हूँ जैसा भी
तुम तो हो दयालु भारी
भार सारे उतार दो
हे प्रभु उद्धार दो
बहुत सह चुके मार माया की
अब तो आओ प्रभु
पुकारता तुम्हें एक अधमी आज

00000

देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) 481001

पूर्व मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा नहीं रहे

"भावभीनी श्रद्धाञ्जलि"

विगत 4 अक्टूबर 2023 को सुबह लगभग 6-7 बजे के बीच राजधानी रायपुर स्थित एक पार्क छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मंत्री वर्तमान में वैदिक योग यज्ञ प्रचार समिति के संचालक श्री दीनानाथ जी वर्मा योग कराते हुए सूर्यनमस्कार के तीसरे राऊंड में हृदयगति के रुक जाने से महाप्रयाण कर गए। वे हमेशा कहा करते थे, **जिएं तो सुखपूर्वक, मरें तो सुखपूर्वक,** 10 मिनट पहले ही यह बोलकर स्वयं जिंदगी की जंग हार गए, उस दिन वर्मा जी के साथ योग करने वाले साथियों का कैसा अद्भूत व भयानक अनुभव रहा, वे तमाम मानवीय प्रयासों के बाद भी उन्हें न बचा सकें, कैसे दुनिया क्षणभंगूर है, सांसों का क्या भरोसा टूट जाए चलते-चलते। एक दिन आया, वो जाएगा, मृत्यु शास्वत सत्य है। ऋग्वेद के एक मत्रांश में कहा- **"युवानं सन्तं पलितो जगार"** यह बात अक्षरशः सत्य घटित हुई 10 मिनट पहले स्वास्थ्य पर व्याख्यान देते हुए वैदिक साहित्य के स्वाध्यायी, आर्यसमाज के लिए समर्पित, बिना भगवा के साधु सा जीवन जीने वाले साधक, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के जन्मदाताओं में एक, राज्य निर्माण के पहले ही सभा के विविध पदों में अपनी जिम्मेदारियां निभाने वाले, एक उत्साही दयानन्दी मिशनरी भावना से ओतप्रोत, अथक योद्धा अपने पीछे असंख्य साथियों के लिए कभी न भर पाने वाला एक वृहदाकार शून्य छोड़कर महाशून्य में विलीन हो गए।

आदरणीय वर्मा जी से लेखक का सम्पर्क 1990 दशक से ही हो गया था, जब वह गुरुकुल में अध्ययनार्थ प्रवास कर रहा था। पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी के प्रभाव में आर्यसमाज में दीक्षित होने के बाद डाक विभाग में नौकरी करते हुए गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर प्रायः आप पधारा करते थे। मेरे स्नातक बनने के बाद जब प्रचारार्थ रायपुर आना-जाना हुआ, परिचय बढ़ता गया धीरे-धीरे वर्मा जी के साथ 2003 में जब छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा अस्तित्व में आई दो-दो माह लम्बा वेद प्रचार अभियान माता कौशल्या देवी जी के नेतृत्व में आपकी टीम भी थी, जो दिन रात इसे सफल बनाने श्रम करती थी, सेवानिवृत्ति के बाद आपका जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित हो गया था, पूरे देश में कोई बड़ा आर्य महासम्मेलन कहीं भी हो, एक बड़ी संख्या में छ.ग. के आर्यजनों को लेकर आप पहुंचते रहे। सभा के जन्मकाल से ही मैं भी सभा के मुख पत्र पहले "आर्यमान" बाद में भारत सरकार में पंजीयन के बाद "अग्निदूत" के रुप में जब मासिक पत्र का शुभारम्भ किया गया प्रारम्भ में पं. जैमिनि कुमार शर्मा सम्पादक रहे 3-4 अंक के बाद सभा द्वारा मुझको सम्पादक नियुक्त किया गया। यह धीरे-धीरे वामन रुप से विराट रुप की ओर आर्यजनता के प्यार और प्रतिसाद से अग्निदूत गति कर रहा है। वर्मा जी कई बार सार्वजनिक सभाओं में मेरा उत्साह बढ़ाने के लिए कह दिया करते थे-एक धर्मवीर दूसरा कर्मवीर मैं तो केवल दो लोगों का सम्पादकीय पढ़ता हूँ, जबकि मैं डॉ. धर्मवीर जी के चरणों के धूल बराबर भी नहीं किन्तु अपनापन तो अपनापन है, अस्तु।

दिवंगत आत्मा के पावन चरणों में अन्तिम प्रणाम करते हुए उनके लिए अग्निदूत परिवार की ओर से प्रभु से पुण्याश्रय की कामना करता हूँ।

– सम्पादक

समाचार प्रवाह

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में सोल्लास मना : "शिक्षक दिवस"

रायपुर । गत सितम्बर 5 को भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जयन्ती उपलक्ष्य में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय, टाटीबन्ध रायपुर के विशाल प्रांगण में प्रथम सभी छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने प्राचार्य श्री विनोद सिंह जी के नेतृत्व में पं. संजय शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया । आहुतियां देते हुए सभी ने मंगल कामनाएँ की । गणमान्य अतिथियों द्वारा इस अवसर पर शिक्षक दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला गया ।

सभा प्रधान डॉ. रामकुमार पटेल, मंत्री श्री अवनीभूषण पुरंग एवं कोषाध्यक्ष आचार्य जगबन्धु आर्य जी, श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव, केवलकृष्ण बिज ने इस समारोह में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की । इस पर सभा प्रधान ने अपने उद्बोधन में शिक्षकों का समाज के उत्थान में योगदान पर अपने विचार रखते हुए विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं का सम्मान कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया । विद्यालयीन व्यवस्थाओं को अधिक बेहतर बनाने का आश्वासन सभा मंत्री श्री पुरंग जी ने दिया । शान्तिपाठ पूर्वक प्रसाद वितरण के बाद समारोह समापन की घोषणा हुई ।

- संवाददाता : पं. संजय शास्त्री, टाटीबन्ध रायपुर

डी.ए. वी. हुडको भिलाई के विद्यार्थियों ने मारी बाजी

भिलाईनगर । डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल हुडकों भिलाई के विद्यार्थियों प्रियांश भादूड़ी एवं अनमोल मालवीय ने रूंगटा पब्लिक स्कूल भिलाई में आयोजित इंटर स्कूल प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर शाला को गौरवान्वित किया । प्रश्नोत्तर का संचालन राजूदत दीपक वोहरा जी ने किया । पुरस्कार वितरण अध्यक्ष श्री संजय रुंगटा के कर कमलों से निदेशक जवाहर सूरीसेट्टी एवं प्राचार्य जगदीश सिंह धामी की उपस्थिति में हुआ । प्रश्नोंत्तरी में जिले की कुल 36 टीमों ने भाग लिया । शाला के प्राचार्य श्री प्रशान्त कुमार ने सफल विद्यार्थियों को बधाई प्रेषित की है । **- संवाददाता : डी.ए.वी. स्कूल हुडको**

छत्तीसगढ़ से सम्बद्ध आर्यसमाजों द्वारा श्रावणी पर्व सोल्लास सम्पन्न

दुर्ग । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध विभिन्न आर्यसमाजों में दिनांक 30 अगस्त 23 से 13 सितम्बर 23 तक श्रावणी पर्व के अवसर पर रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन वैदिक हवन व सत्संग का कार्यक्रम हुआ । जिसमें आर्यसमाज पार्वतीपुर (सरगुजा), आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, आर्यसमाज कवर्धा, महिला आर्यसमाज जवाहर नगर रायपुर, आर्यसमाज आर्यनगर, दुर्ग, आर्यसनाज रायगढ़, आर्यसमाज सलखिया, आर्यसमाज मुड़ागांव, आर्यसमाज पुसौर, आर्यसमाज पंगसुवा, आर्यसमाज कोहका, आर्यसमाज सुपेला, आर्यसमाज संतोषीनगर रायपुर आदि सहित अन्य क्षेत्रों के आर्यसमाजों में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । रायपुर में पारिवारिक वेदप्रचार पखवाड़ा आयोजित हुआ । इस महाभियान में सभा के पदाधिकारियों सहित समस्त आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व अन्य गणमान्य आर्यजन एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भारी संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया । – **निज संवाददाता**

"अग्निदूत" के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क 100/– यथाशीघ्र सभा कार्यालय में भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रुप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे । जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क 800/– रु. भेजें । इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें । अन्यथा इस मास से 'अग्निदूत' भेजना बंद कर दिया जायेगा । पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाउन्ट नं. 32914130515 आई.एफ.एस.सी. कोड **SBIN0009075** कोड नं. है । जिसमें आप बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4225499 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत करा सकते हैं । 'अग्निदूत' मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं ।

कार्यालय पता :– 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग,) 491001 फोन : 0788-4225499

आर्यसमाज पंडरिया कबीरधाम में आयोजित वेदप्रचार सप्ताह के दौरान यज्ञ में सम्मिलित श्रद्धालु आर्यजन

आर्यमहासम्मेलन जयपुर (राज,) में शामिल होने पहुंचे सभा के कोषाध्यक्ष व छ.ग. के आर्यजनों का समूह

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

आर्य जगत् के कर्मठ योद्धा एवं
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
के पूर्व मंत्री **श्री दीनानाथ वर्मा**
को सभा के समस्त पदाधिकारी
एवं अंतरंग सदस्य व प्रतिनिधियों,
तथा सम्पूर्ण आर्य जगत् की ओर से

भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि

: श्रद्धावनत् :

डॉ. रामकुमार पटेल (प्रधान), श्री अवनीभूषण पुरंग (मंत्री), आचार्य जगबन्धु शास्त्री (कोषाध्यक्ष)
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुग्र (छ.ग.)

CHH-HIN/2006/17407

सितम्बर 2023

डाक पंजी.छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2021-23

प्रेषक :
"अग्निदूत" हिन्दी मासिक पत्रिका,
कार्यालय-छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001

संदेश (साप्ताहिक)
दिल्ली-110001

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2019-20-21

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबंध स्थित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय में आयोजित शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक-शिक्षिकाओं का सम्मान करते हुए सभा के माननीय पदाधिकारी गण

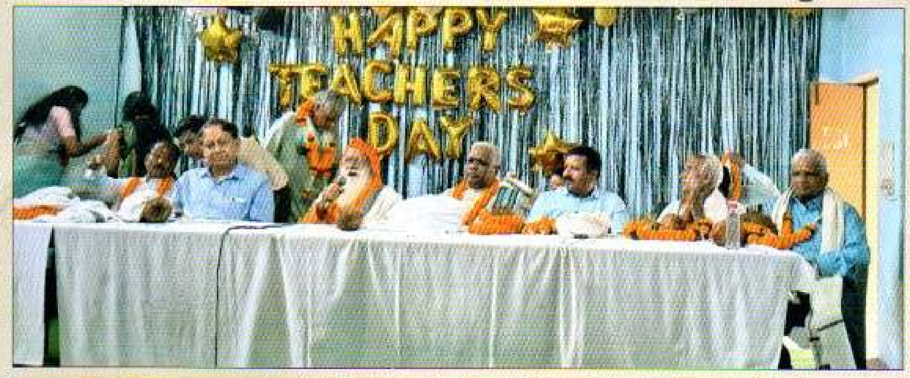

सम्पादक-प्रकाशक-मुद्रक : डॉ. रामकुमार पटेल द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।